ओ३म्

# सत्यार्थ सौरभ

मासिक
जून–२०२५

जून–२०२५ ◆ वर्ष १४ ◆ अंक ०२ ◆ उदयपुर

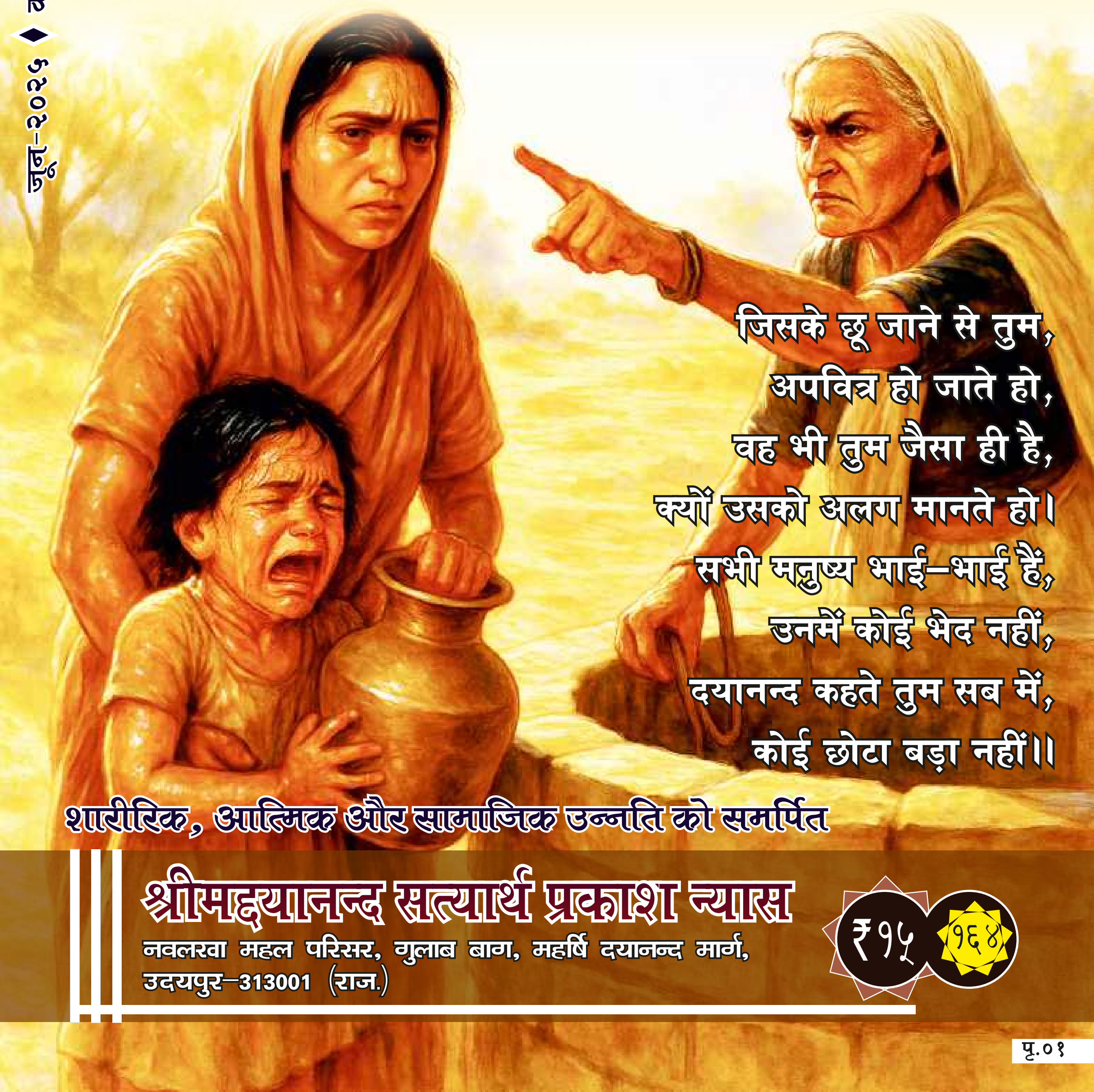

जिसके छू जाने से तुम,
अपवित्र हो जाते हो,
वह भी तुम जैसा ही है,
क्यों उसको अलग मानते हो।
सभी मनुष्य भाई–भाई हैं,
उनमें कोई भेद नहीं,
दयानन्द कहते तुम सब में,
कोई छोटा बड़ा नहीं।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

**श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास**
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १६४

भारत के सरताज
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच
KITCHEN KING
किचन किंग
CHUNKY CHAT MASALA
चंकी चाट मसाला
GARAM MASALA
गरम मसाला
SHAHI PANEER MASALA
शाही पनीर मसाला
PEACOCK
KASOORI METHI
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
CHANA MASALA
चना मसाला
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

**प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ**

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी ( अमेरिका )

**परामर्शदाता संपादक मण्डल**

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

**सम्पादक**

अशोक आर्य

**प्रबन्ध सम्पादक**

भवानी दास आर्य

**प्रबन्ध सहयोग ( ग्राफिक्स डिजाईनर )**

नवनीत आर्य ( मो. 9314535379 )

**व्यवस्थापक**

भँवर लाल गर्ग


| सहयोग ◆ | भारत | विदेश |
|---|---|---|
| संरक्षक | - 11000 रु. | $ 1250 |
| आजीवन | - 1500 रु. | $ 300 |
| पंचवर्षीय | - 600 रु. | $ 125 |
| वार्षिक | - 150 रु. | $ 30 |
| एक प्रति | - 15 रु. | $ 10 |

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२६
ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी
विक्रम संवत्
२०८२
दयानन्दाब्द
२०१

June - 2025


सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 3000 रु. |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 2000 रु. |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 1000 रु. |


## समाचार ३०


| | |
|---|---|
| ०४ | वेद सुधा |
| १४ | क्रान्तिदूत राम |
| १६ | प्रकृति का दोहन हानिकारक |
| १९ | सुख-दुख का स्वरूप मन के अनुरूप |
| २३ | गुस्से को कीजिए गो |
| २७ | अलसी (गुण धर्म एवं आत्ययिक प्रयोग) |
| २८ | सत्यार्थ मित्र बनें |
| २९ | कहानी दयानन्द की |



स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १४ अंक -०२

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

**प्रकाशक**

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

# वेद सुधा

**राष्ट्र को दुरित, दुर्गति से बचाने का उपाय**

**न तमꣳहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम्।**
**सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विषः।।** - सामवेद ४२६

**ऋषि**- अंहोमुग्वामदेव्यः।। **देवता**- विश्वदेवाः।। **छन्दः**- उपरिष्टाद् बृहती।।

**अन्वयः**- **सजोषसः देवासः यम् अर्यमा मित्रः वरुणः द्विषः अतिनयति तम्, अंहः न अष्ट, न दुरितम्।।**

**शब्दार्थ** – **(सजोषसः)** प्रेम से सेवा में तत्पर **(देवासः)** विद्वान् **(यम्)** जिस प्रजा को **(अर्यमा)** न्यायकारी **(मित्रः)** सर्वहितकारी **(वरुणः)** श्रेष्ठ गुणोंवाला राजा **(द्विषः)** शत्रुओं को **(अतिनयति)** दमन करके शासन करता है। **(तम्)** उस जन को **(अंहः)** पाप **(न अष्ट)** नहीं घेरता **(न दुरितम्)** न पापजनित दुःख ही सताते हैं।

**व्याख्या**– मन्त्र में उत्तम शासन के लिए तीन बातें आवश्यक बताई गई हैं। पहली बात यह कि- 'शासन में न्याय ठीक-ठीक और समय पर हो।' दूसरी बात यह कि- 'राजा अथवा शासक वर्ग सारी प्रजा को निज सन्तान समझकर प्रेम से व्यवहार करनेवाला हो।' तीसरी बात यह कि- 'शत्रुओं से राष्ट्र की रक्षा करनेवाला हो।' ये तीन बातें जिस शासन में होंगी, उसमें **'अंहः दुरितम् न अष्ट'** पाप, दुर्गति और अशान्ति कभी नहीं होगी।

भारत की स्वाधीनता से पूर्व हम अपने स्वराज्य के बड़े रंगीन सपने सँजोया करते थे। सोचते थे, स्वाधीन भारत एक बार फिर सारे संसार का पथ-प्रदर्शक बनेगा। वह पथ-भ्रष्ट संसार को फिर सुख और शान्ति से जीने की कला सिखाएगा। भारत के ऋषियों के प्रति वह निष्ठा अब तक भी समस्त संसार के विचारकों की रही है। यूरोप के एक विश्व-शान्ति-सम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए मिस जटस्कू ने प्रति-निधियों को कहा था-

"O you assembled scholars of earth, if you desire to keep the atmosphere of the world, quite and calm, go to the saints in the caves forests of India, sit at their feet & learn divine wisdom from their holy lips and then propagate it in Europe and America."

'अय भूमण्डल के समस्त विद्वानों! यदि आप संसार के वायुमण्डल को क्षोभरहित और शान्त रखना चाहते हैं तो भारत के वन और गुफाओं में तप करते हुए महात्माओं की सेवा में जाओ और उनके चरणों में बैठकर उनके पवित्र ओष्ठों से जो विचार सुनो, उनका प्रचार और प्रसार योरुप और अमेरिका में करो, तब संसार में शान्ति हो सकती है, आपके विचारों से वह सम्भव नहीं।'

वस्तुतः प्राचीन भारत के सुसंस्कृत आर्य लोगों ने अपने उदात्त आचार और व्यवहार से समस्त समाज का जीवन ही धर्ममय बना दिया था। उस पावन समय की झाँकी जब हम अपने अतीत के इतिहास और धार्मिक ग्रन्थों में पढ़ते हैं, तो आश्चर्य होता है।

छान्दोग्य उपनिषद् में उल्लेख है कि एक बार एक शास्त्रीय विषय की चर्चा छिड़ने पर आश्रमवासी वनस्थों को परस्पर के विचार-विनिमय से सन्तोष न हुआ। वे महात्मा उद्दालक के नेतृत्व में, उस समय के विख्यात् विचारक और विद्वान् केकय देश के अधिपति राजा अश्वपति के पास अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए पहुँचे। राजा ने अतिथियों का स्वागत किया और उसके पश्चात् गोष्ठी प्रारम्भ हुई। विचार होते-होते जब भोजन का समय हो गया तो राजा ने महात्माओं से अनुरोध किया कि अब भोजन का समय हो गया है, पहले आप भोजन कर लें और शेष विषय पर उसके बाद विचार कर लेंगे।

राजा के भोजन के इस प्रस्ताव को सुनकर एक महात्मा बोले-'राजा का अन्न तो एक साधक के लिए अग्राह्य होता है। न जाने किस-किस प्रकार से राजकोष का संग्रह होता है! उस प्रकार का अन्न मन पर दूषित प्रभाव डालेगा।' महात्मा की यह आशंका अनुचित नहीं थी। किस-किस का अन्न अग्राह्य होता है? इस पर मनु ने व्यवस्था दी है और उसका उल्लेख ऋषि दयानन्द ने भी संस्कारविधि के गृहाश्रम प्रकरण में किया है। वह श्लोक निम्न है-

**दशसूनासमं चक्र दशचक्रसमो ध्वजः।**
**वशध्वजसमो वेशो दशवेशसमो नृपः।।** - मनु. ४/८५

'जो चक्र के द्वारा जीविका कमाते हैं, जैसे कुम्हार, गाड़ी और ट्रांस्पोर्ट से जीविका करनेवाले, अर्थात् जिनके काम में जीवहिंसा तो बहुत होती है और प्राणियों का पालन और रक्षण नहीं होता, उनके अन्न को खानेवाले के मन पर दशहत्या करने के बराबर दूषित प्रभाव पड़ता है। जो शराब निकालकर बेचनेवाले तथा धोबी का अन्न ग्रहण करते हैं, उनके मन पर चक्रवाले अन्न की अपेक्षा से दस गुणा और अधिक अर्थात् सौ हत्या करने के बराबर मन पर दुष्प्रभाव होता है। जो लोग बाहर के दिखावे और वेशभूषा-आडम्बर और ढोंग से जीविकोपार्जन करते हैं, उनका अन्न पहले से दस गुणा अधिक, अर्थात् एक हजार जीव-हत्या करने के तुल्य मन को दूषित करता है। इसी प्रकार शासन-व्यवस्था में सावधानी से मर्यादा की रक्षा न करनेवाले राजा का अन्न पहले की अपेक्षा और दस गुणा अधिक, अर्थात् दस हजार हत्या करने के समान मन को सदोष करता है। अभिप्राय यह है कि मनुष्य की जीविका इस प्रकार की हो कि जिसमें न्यून-से-न्यून प्राणियों को कष्ट पहुँचे और अधिक-से-अधिक का संरक्षण और पालन हो, वह जीविका उत्तम और उनका अन्न ही मन को शुद्ध रख सकता है, क्योंकि अन्न का सूक्ष्म भाग ही तो मन का आधार है। यों तो कृषक के काम में भी हल चलाने, सिंचाई करने, फसल की गुड़ाई, कटाई और अन्न निकालते समय भी बहुत जीव-हिंसा होती है किन्तु कृषक के अन्नादि से प्राणियों का पालन कहीं अधिक मात्रा में होता है, अतः कृषक का अन्न पवित्र माना गया है।

तो महात्मा की इस बात को सुनकर अपनी शासन-व्यवस्था के सम्बन्ध में राजा अश्वपति ने जो बात कही, वह समस्त संसार के इतिहास में बेजोड़ है। राजा ने कहा-

**न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न च मद्यपः।**
**नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥**

'मेरे सारे राज्य में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस और अदानी नहीं है, कोई शराबी नहीं है, यज्ञ न करनेवाला कोई नहीं है, मूर्ख कोई नहीं है, कोई दुराचारी पुरुष नहीं है। जब पुरुष ही चरित्रहीन नहीं है तो स्त्री के तो दुराचारिणी होने का प्रश्न ही नहीं उठता।' आज के युग में बड़े माने जानेवाले देशों में अमरीका और रूस भी प्रजा की इस आचार-शुचिता का कोई दावा नहीं कर सकता। वहाँ भी सभी प्रकार के जघन्य अपराध होते हैं। इसीलिए वहाँ के देश भारत से कुछ ऊँचे आदर्श की आशा रखते थे, किन्तु स्वाधीनता के पश्चात् भारतीयों का जो चारित्रिक पतन हुआ है, वह आश्चर्यजनक है। भारत की स्वाधीनता के लिए त्याग और तप करनेवाले यद्यपि बहुत बड़ी संख्या में कालकवलित हो गए, किन्तु अब भी हजारों हैं और उनकी अन्तर्वेदना कुछ बात करते ही फूट निकलती है। जालन्धर (पंजाब) से प्रकाशित होनेवाले ७ अगस्त सन् ८३ के 'पंजाब केसरी' पत्र में एक पुराने स्वतन्त्रता सेनानी श्री बलवन्त राय उप्पल का घनश्याम पण्डित नामक पत्रकार के साथ हुए साक्षात्कार का विवरण छपा है। इसकी प्रारम्भिक पक्तियाँ इस प्रकार हैं-

'ये भी एक स्वतन्त्रता सेनानी हैं, जिन्होंने अपने यौवन का खासा हिस्सा स्वतन्त्रता-आन्दोलन में झोंक दिया था- इस निश्चय के साथ कि जिस देश की आजादी के लिए आज लड़ रहे हैं, कल वह हमारा अपना देश होगा जिसमें सभी को समानता मिलेगी, सभी को गुल्ली, कुल्ली और जुल्ली मिलेगी। प्रशासन साफ-सुथरा होगा। सभी को न्याय मिलेगा। सभी प्रसन्न होंगे। सभी को भरपेट रोटी मिलेगी। किन्तु ३६ वर्ष बीत जाने के बाद भी देश की परिस्थितियों को देखकर निराशा होती है, क्योंकि आज देश में वे सभी वस्तुएँ अलभ्य हैं जिनकी कि स्वतन्त्र भारत में कल्पना की गई थी। आज न्याय कहीं है ही नहीं। एक सामान्य नागरिक को कोई पूछता नहीं। गरीब की कहीं सुनवाई नहीं। पहुँच और दबदबेवाले दनदना रहे हैं। कानून का डर नहीं। बहू-बेटियों का सम्मान सुरक्षित नहीं। क्या यह वही देश है जिसकी आजादी के लिए बलिदानियों ने अपने जीवन की भेंट चढ़ाई थी? आज हमें फिर उसी प्रकार के इंकलाब को लाने की जरूरत है, जिस प्रकार का हम सन् ४७ में लाये थे।' आज भारत का प्रबुद्ध वर्ग इसी प्रकार की कुंठा से व्यथित है-

**जंगे-आजादी लड़ी तब अपने सपने और थे।**
**हाल अपना आज जो है, वो कभी सोचा न था॥**

प्रश्न यह है कि हम देश की इस परिस्थिति में क्या कर सकते हैं? निराश होकर बैठने से तो हानि-ही-हानि है-

**हल करने से हल होते हैं पेचीदा मसायल'।**
**वर्ना तो कोई काम भी आसाँ नहीं होता।**

वेद के इस मन्त्र में भारत के मानसिक नभोमण्डल में छाई इन निराशा की काली बदलियों को छाँटने के ही महत्त्वपूर्ण उपाय हैं। इनमें पहला उपाय है- देश के वायु-मण्डल को शुद्ध करने के लिए न्याय-प्रणाली पक्षपात-रहित और शीघ्र निर्णय करनेवाली होनी चाहिए। आज देश में अपराधों की बाढ़-सी आ रही है। डाके, बलात्कार, हत्या और चोरी के समाचारों से अखबार पटे पड़े रहते हैं; डाकुओं में अपठित और गरीबी से पीड़ित लोग नहीं हैं, बी.ए. और एम.ए. हैं। नई दिल्ली में बैंक खजाने को लूटनेवाले सम्पन्न घरों के और उच्च शिक्षा प्राप्त युवक ही थे। उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के बहुत बड़े डाकुओं की समस्या वहाँ की सरकारों के लिए बहुत बड़ा सिरदर्द है। इन बुराइयों के बढ़ने में कतिपय अन्य कारणों के साथ सबसे मुख्य कारण न्याय-प्रणाली की शिथिलता, न्याय की अतिव्यय-साध्यता, अपराधियों को मुक्त कराने के लिए राजनैतिक नेताओं के दबाव आदि कुछ ऐसे कारण हैं कि जिनसे अपराधियों को दण्ड का भय नहीं रहा।

हमें जो अंग्रेजों का ढाँचा उत्तराधिकार में मिला है, चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र है और चाहे न्यायालय है, हम उन्हें उसी प्रकार घसीटे ले-जा रहे हैं। इससे कितनी हानि हो रही है, यह विचारने और कम करने का किसी के पास समय नहीं है। प्रधानमन्त्री और मुख्यमन्त्री जब पहली बार पद सम्भालते हैं तो बड़ी-बड़ी योजनाएँ जनता के सम्मुख रखते हैं। किन्तु कुछ ही समय पश्चात् कहीं पार्टी के असन्तुष्ट तत्त्वों को अनुकूल बनाने में, कहीं विरोधी पार्टियों की योजनाएँ ध्वस्त करने में, संक्षेप से कहा जाय तो सारा समय और शक्ति अपने अधिकार की रक्षा में ही निकल जाता है। सामाजिक जीवन के परिष्कार के लिए कुछ रचनात्मक काम नहीं हो पाते।

हमारी न्याय-पद्धति ईसाइयों की भावना से प्रभावित है, जिसके चिन्तन का मुख्य केन्द्र-बिन्दु यह है कि पाप के फल, दुःख से संसार को छुड़ाने के लिए मसीह शूली पर चढ़ गए। किसी के मन को दुःख नहीं होना चाहिए। किसी उर्दू शायर के शब्दों में उनकी भावना को इस प्रकार प्रकट किया जा सकता है-

**जब गुनहगारों पे देखी रहमते-परवरदिगार।**
**बेगुनाहों ने पुकारा हम गुनहगारों में हैं।।**

'जब अपराधियों पर प्रभु का विशेष कृपाभाव देखा तो शुद्ध-पवित्र व्यक्ति भी सोचने लगे कि हमसे तो ये ही अच्छे रहे, और वे निर्दोष होते हुए भी प्रभु के कृपापात्र बनने के लिए चिल्लाने लगे हम भी पापी हैं, हमारा भी उद्धार कीजिए।'

चौथी और पाँचवीं लोकसभा की सदस्यता के दस वर्षों में मेरे निर्वाचन क्षेत्र में १५ से कुछ अधिक कत्ल के केस हुए। मैं उन केसों का सावधानी से अध्ययन करता रहा। कई-कई वर्ष तक हाईकोर्ट तक केस लड़े गए, किन्तु परिणाम यह निकला कि किसी भी केस में किसी को मृत्यु-दण्ड नहीं मिला। हाँ, दो अभियोगों में कुछ को आजीवन कारावास अवश्य हुआ। आजीवन कारावास शब्द सुनने में ही भयंकर लगता है; उसकी अवधि बीस वर्ष है और वे कट-छटकर १२ या १५ वर्ष ही रह जाते हैं। जहाँ केस में थोड़ी-सी भी संदिग्ध स्थिति आती है कि बस न्यायाधीश सब-छोड़कर उसे दोषमुक्त कर देते हैं।

होना यह चाहिए कि आज के कानून में कुछ अपनी प्राचीन दण्ड-प्रक्रिया के उपादेय अंशों का समावेश करके इसका स्वरूप तेजस्वी बनाना चाहिए, जिससे अपराधी आतंकित हों। उदाहरण के लिए मैं चाणक्य के कौटिल्य अर्थशास्त्र की एक बात का उल्लेख यहाँ करता हूँ-

चाणक्य ने लिखा है कि यदि चोरी की घटना कहीं घट जावे तो उस क्षेत्र के पुलिस-अधिकारी को आदेश होना चाहिए कि तीन मास के अन्दर चोरी का पता लगाकर गए हुए माल को उसके मालिक को दिलवाए और अपराधी को उचित दण्ड की व्यवस्था कराए। यदि पुलिस-अधिकारी नियत अवधि में चोरी का पता न लगा सके तो चोरी गए हुए माल की क्षतिपूर्ति उस अधिकारी के वेतन से करानी चाहिए। यह बात कितनी उत्तम है! इस नियम का पहला लाभ तो यह होगा कि पुलिस जनता के जानमाल की पूरी चौकसी से रक्षा करेगी और यदि कहीं दुर्घटना होगी तो पूरी सतर्कता से माल का पता लगाएगी और दोषी को दण्ड दिलवाएगी।

दूसरा लाभ यह होगा कि जनता का सरकार में विश्वास बढ़ेगा और वह अपने को सुरक्षित समझकर पूरे उत्साह से उद्योग-धन्धे चलावेगी।

इस समय भारत में अन्धेर मचा हुआ है। अधिकांश अपराधी अपनी कमाई में पुलिस को भागीदार बनाकर निर्भयता से दुष्कर्म करते हैं। उन्हें पता है थाने में पहले तो रिपोर्ट ही दर्ज नहीं होगी। यदि ले-देकर रिपोर्ट लिखी भी गई तो उसपर कार्यवाही कुछ नहीं होगी। पुलिस की इस अवस्था पर पंजाव के एक आर्य-प्रचारक बड़ी मनोरंजक कहानी सुनाया करते थे- एक मीरासी के घर में चोरी होने पर उसने थाने में रिपोर्ट कर दी और वहाँ से तफ्तीश के लिए पुलिस आई। मीरासी हुक्का पी रहा था। पुलिस के अधिकारी ने मौके का मुआयना किया और मीरासी से पूछताछ करते हुए चोरी में गए सामान का ब्यौरा नोट करना आरम्भ किया। नकदी, बर्तन-भाण्डे, कपड़े सब लिखा दिए। पुलिस-ऑफिसर ने पूछा- 'और कोई चीज तो लिखनी शेष नहीं रही?' मीरासी ने कहा- 'सब लिस्ट मुझे एक बार सुना दीजिये।' पुलिसवाले ने सब चीजें पढ़ दीं। मीरासी ने कहा- 'इनमें एक हुक्का और नोट कर दीजिये।' पुलिसवाले ने आश्चर्य से मीरासी को देखते हुए कहा- 'हुक्का तो तुम पी रहे हो, यह कहाँ गया है?' मीरासी ने कहा- 'इसे बेचकर आपकी भेंट-पूजा करूँगा, मेरी ओर से तो गया ही!' इस बात में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। थाने में रिपोर्ट भी तब लिखी जाती है, जब कुछ चढ़ावा चढ़ा दिया जाता है। लेन-देन और परिचय-प्रभाव का क्रम कहीं-कहीं तो हाईकोर्ट तक भी पीछा नहीं छोड़ता।

देश की आपराधिक वृत्ति में सुधार के लिए इसमें परिवर्तन करना होगा। दुःखियों को यह विश्वास होना चाहिए कि हम राजकीय व्यवस्था में सुरक्षित हैं।

तो मन्त्र में पहली बात कही गई कि न्याय शीघ्र, सुलभ और निष्पक्ष होना चाहिए।

मन्त्र की दूसरी बात है कि शासक वर्ग प्रजा को अपनी सन्तान के समान प्रिय समझे। जैसा कि कालिदास ने रघु के राज्य का वर्णन करते हुए लिखा है, **'स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः'**- 'समस्त प्रजा का वास्तविक पिता रघु ही था, उनके माता-पिता तो केवल जन्म देनेवाले थे।' ऐसे आत्मीयता के वातावरण में प्रजाजन राष्ट्र की रक्षा के लिए बड़े-से-बड़ा त्याग करने को उद्यत हो जाते हैं।

रामायण और महाभारत में हम पढ़ते हैं कि जब राम और पाण्डव वन को चले तो पीछे-पीछे प्रजा के लोग भी साथ चल दिये। यह आत्मीयता का सम्बन्ध शासकों के सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार का ही परिणाम था। तो मन्त्र में परामर्श दिया कि शासक वर्ग परिवार के समान आत्मीयता से जनता के साथ बरतें।

मन्त्र की तीसरी बात है शासक आक्रान्ता और शत्रुओं से राष्ट्र की रक्षा करनेवाला हो। राष्ट्रीय सेना दक्ष और शक्ति-सम्पन्न हो, जो शत्रु को मुँहतोड़ उत्तर दे सके। यह शक्ति तभी आएगी जब संयमी और वीरपुरुष राष्ट्र की रक्षापंक्ति को सँभालेंगे। विलासी और अय्याश राष्ट्र की रक्षा नहीं कर सकते। मुगल शासन के अन्तिम दिनों में इसी तरह के दुर्गुणों से राष्ट्र दुर्बल हो गया और विदेशी आक्रान्ता यहाँ की प्रजा को अपमानित करके यहाँ की अपार सम्पत्ति, कोहिनूर और तख्ते-ताऊस तक को यहाँ से ले गए थे। इस प्रकार के दुर्बल राष्ट्र में अन्यान्य दोष भी आ जाते हैं। यदि देश के प्रहरी संयमी, देशभक्त और वीर हों तो ऐसे राष्ट्र में पाप और अशान्ति नहीं होती।

**लेखक- पण्डित शिवकुमार शास्त्री**

**साभार- श्रुति-सौरभ**

## सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

**सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफीस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।**

## दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी-बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

# ऑपरेशन सिन्दूर– वो 25 मिनट

गत वर्षों में कश्मीर में बहुत कुछ बदला, एक नयी बयार बह रही है, ऐसा समझ आने लगा। आतंक के मसीहा निराश हैं यह तब लगने लगा जब विधान सभा के चुनाव निर्विघ्न सम्पन्न हुए तथा रिकार्ड मतदान हुआ। पर्यटन नए आयाम स्थापित कर रहा था। कश्मीर के वासियों की जेबें गुलजार हो रहीं थीं। पर अचानक यह सब जैसे थम गया। २२ अप्रैल का वह दुर्भाग्यपूर्ण दिन। परिवार के साथ धरती के स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर को निरापद जान अनेक परिवार अपनी कश्मीर यात्रा में पहलगाँव जा पहुँचे, और वहाँ पूर्व नियोजित आतंकी बर्बर हमला निर्दोष यात्रियों पर किया गया। अबकी बार एक ऐसी बात थी जो पूर्व के आतंकी हमलों में नहीं थी। वह यह कि इन क्रूर बर्बर राक्षसों ने अपने शिकार से धर्म पूछा, सबूत के तौर पर उनकी पेंट खुलवायी, कलमा पढ़ने को कहा और यह सुनिश्चित करने पर कि वह हिन्दू है उसे उसकी पत्नी और बच्चों के सामने गोली मार दी। कुछ ही मिनटों में यह नृशंस हत्याकाण्ड हो गया, २६ बहिनों की माँग का सिन्दूर उजड़ गया। अपराधी भाग गए। एक पीड़िता ने बताया कि उसने जब रोते हुए उन नराधमों से कहा कि वे उसे भी गोली मार दें तो उसने कहा हम तुम्हें जिन्दा इसलिए छोड़ रहे हैं ताकि तुम जाकर मोदी को बताना। इससे ज्ञात होता है अबकी बार उद्देश्य कुछ अलग था। धर्म पूछकर मारना अर्थात् भारत के सामाजिक ताने बाने को तार-तार करने का प्रयास तथा मोदी को बताना यह कहना साबित करता है कि आतंक के प्रायोजकों के मन में प्रधान मंत्री मोदी जी के लिए अपार घृणा है।

इस पर प्रधानमंत्री मोदी का उत्तर बिहार की एक जनसभा से आया–

'मैं स्पष्ट शब्दों में कहना चाहता हूँ कि जिन्होंने हमला किया है और जिन्होंने इसकी साजिश रची है, उन्हें उनकी कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी... मैं पूरी दुनिया को बिहार की धरती से कहता हूँ कि भारत हर आतंकी और उनके समर्थकों को ढूँढकर सजा देगा। हम उन्हें धरती के किसी भी कोने से खोज निकालेंगे।.... हर आतंकी को ऐसी सजा दी जाएगी, जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी। आतंकियों की बची-खुची जमीन को भी मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है।'

मोदी सरकार ने सम्भवतः इस समय से तुरन्त ही अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया। हर मोर्चे पर अपने को कसा, और योजना बनायी। रक्षा मंत्री ने बयान दिया कि वैसा ही होगा जैसा राष्ट्र चाहता है। अगर ऐसी योजना नहीं होती तो ७ तारीख की रात को जो कार्यवाही दिखी और भारतीय सेना ने पाकिस्तान में अन्दर तक घुसकर

आतंकवादियों के जो ६ ठिकाने नेस्तनाबूद किए वैसा न हो पाता। विश्लेषण बताता है कि केवल सैन्य तैयारी ही नहीं राजनीतिक तौर, कूटनीतिक तौर पर भी और खुफिया सूचनाओं के संग्रह की भी भारी तैयारी की गई। इसमें विदेश मंत्री जयशंकर और एन. एस. ए. प्रमुख अजीत डोवाल की प्रमुख भूमिका रही। भारत की तीनों सेनाएँ जब पूरी तरह तैयार हो गईं, विक्रान्त ने कराची एयरपोर्ट को घेर लिया तो अचानक से ७ मई की रात को पहलगाम का बदला शुरू हुआ। नाम रखा गया ऑपरेशन सिन्दूर।

किसी भी ऑपरेशन का इससे ज्यादा सार्थक क्या नाम हो सकता है। २२ अप्रैल को पहलगाम की बैसरन घाटी में २६ बहनों का सिन्दूर उजाड़ा गया था अब पाकिस्तान को सिन्दूर की कीमत चुकानी थी। देर रात्रि में जब

भारत और पाकिस्तान के लोग निद्रा देवी के आगोश में थे, भारतीय सैन्य कार्यवाही द्वारा पाकिस्तान के अन्दर एक साथ ६ आतंकी ठिकानों को बर्बाद कर दिया गया, जिसमें १०० से ऊपर आतंकी मारे गए। ये सब कुछ हुआ केवल २५ मिनट में। दुश्मन को कुछ पता ही नहीं चला। कुछ लोग अगर यह सोचते हैं कि आतंकियों का पाकिस्तान से कनेक्शन नहीं जोड़ा जा सकता तो वह गलती पर हैं। मरे हुए आतंकियों के जनाजे को कंधे पर लेकर चलते हुए आर्मी ऑफिसर, उनको सलामी देते हुए पाकिस्तानी पुलिस के जवान और उनको सम्मान देते हुए पाकिस्तान का राष्ट्रीय झण्डा, यह सब केवल संकेत ही नहीं कर रहे हैं कि पाकिस्तान में किस तरह आतंकवादी न केवल पनप रहे हैं बल्कि उनको राज्य का पूरा-पूरा समर्थन हासिल है। आश्चर्य करेंगे आप कि जो आतंकी मर गए उनको पाकिस्तान सरकार एक-एक करोड़ रुपया देने जा रही है। विश्वभर की सरकारें अपने-अपने हितों को देखते हुए सच्चाई को न स्वीकारें तो भी पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री के कथन ने पाकिस्तान को नंगा कर दिया कि हम पिछले तीन दशकों से अमेरिका और ब्रिटेन के लिए आतंकवाद का यह गंदा कार्य कर रहे हैं। इससे ज्यादा और क्या प्रमाण हो सकता है?

भारत का ऑपरेशन सिन्दूर बिना किसी क्षति के सफलता से पूर्ण हो गया। यहीं पर बात रुक जाती जैसे कि उरी के उत्तर में सर्जिकल स्ट्राइक और पुलवामा के उत्तर में एयर स्ट्राइक। हमारी सरकार ने पहले ही कह दिया था कि पहलगाम का आतंकी हमला एक्ट ऑफ वार है, उसका प्रत्युत्तर ऑपरेशन सिन्दूर था।

परन्तु यहाँ पाकिस्तान ने आक्रमण किया और लगभग ४०० ड्रोन भारत के भिन्न-भिन्न एयरबेस और मिलिट्री प्रतिष्ठानों पर छोड़े परन्तु वाह रे मेरे भारत की सेना! उनके जवानों का हौसला, तकनीक में उनकी महारत उन्होंने जो एयर डिफेंस मेकैनिज्म बनाया था वह इतना सफल रहा कि जितना पूरे विश्व में कभी सफल नहीं देखा गया। यहाँ तक की रूस और इजराइल में भी। इजराइल के आयरन डोम से भी ज्यादा सफल भारत की एयर शील्ड रही। ड्रोन हो या मिसाइल एक भी बचा नहीं। पाकिस्तान का एक भी टार्गेट सफल नहीं रहा। जब पाकिस्तान ने यह हिमाकत की तो फिर भारत ने जवाब देना ही था और जवाब यह था कि पाकिस्तान के ११ एयरबेस तहस-नहस कर दिए। इससे पहले पाकिस्तानी रडारों को अंधा बना दिया गया। यह सारा कार्य भारत ने किया अपनी सीमा में रहते हुए, अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन किए बिना। क्योंकि अब लम्बी दूरी की मार

करने वाले सारे साधन भारत के पास उपलब्ध हैं। रावलपिण्डी के बिल्कुल पास नूर खान एयरवेस पाकिस्तान की नाक माना जाता है उसको उड़ा दिया और इसके साथ ही एक चर्चा पूरे विश्व में चल पड़ी की क्या पाकिस्तान का न्यूक्लियर भंडारण इससे प्रभावित हुआ? कहा जाता है कि पाकिस्तान ने अपना न्यूक्लियर भंडारण किराना की पहाड़ियों के नीचे बना रखा है। किराना की पहाड़ियों में सैटेलाइट इमेज से दो छेद दिख रहे हैं। कहा यह जा रहा है कि भारत ने यहाँ पर मिसाइल गिराए। चर्चा यह भी है कि लगभग उसी समय एक भूकम्प आया और उसके बाद पाकिस्तान के आकाश में अमेरिका का वह जहाज देखा गया जिसके अन्दर न्यूक्लियर रेडिएशन को नापने के यंत्र लगे हुए रहते हैं और इसके बाद मिश्र से आया हुआ एक हवाई जहाज जो कि बोरोन से भरा हुआ बताया जा रहा है वह सीधी उड़ान न भरते हुए जिग जेग उड़ान भर रहा था, जैसे कि वह बोरोन का छिड़काव कर रहा हो। ध्यान रहे बोरोन वह केमिकल है जो कि न्यूक्लियर रेडिएशन को सोख लेता है। इन सारे बिन्दुओं को मिलाने पर यह ज्ञात होता है कि पाकिस्तान के न्यूक्लियर भण्डार का कुछ ना कुछ तो क्षतिग्रस्त हुआ है। यद्यपि भारत सरकार ने, यहाँ के सैन्य अधिकारियों ने साफ कर दिया कि हमने किराना हिल्स पर पाकिस्तान के न्यूक्लियर भण्डार पर कोई आक्रमण नहीं किया है, हमें तो यह भी नहीं पता कि वहाँ पर पाकिस्तान का इस प्रकार का कोई ठिकाना है। यहाँ पर विश्व की संस्था अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) ने यह कहा है कि पाकिस्तान में कोई रेडिएशन की पुष्टि नहीं हो रही है। जो भी हो पाकिस्तान को इस बार ऐसी मार लगी है कि जो उसने कल्पना भी नहीं की थी और यही ठीक मोदी जी ने कहा था कि हम ऐसा दण्ड देंगे कि आप इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। केवल ८६ घण्टों में पाकिस्तान की यह हालत हो गयी कि वह घुटनों पर आ गया, संघर्ष विराम के लिए गिड़गिड़ाने लगा। इस कार्यवाही में अमेरिका, चीन, और तुर्किये के हथियारों का, जिनका प्रयोग पाकिस्तान ने किया वो हाल हुआ कि ये देश स्तब्ध रह गए। कहा जाता है अपनी और बेइज्जती से बचने के लिए इन देशों ने युद्ध विराम के लिए अपने प्रभाव का उपयोग किया। जो भी हो संघर्ष विराम हो गया।

☞ भारत ने स्पष्ट कर दिया कि आगे कोई भी आतंकवादी कार्यवाही 'एक्ट ऑफ वार' मानी जायेगी और उसी प्रकार उसका जबाव दिया जाएगा।
☞ पाकिस्तान से बात केवल पाक अधिकृत जम्मू कश्मीर के बारे में होगी।
☞ सिन्धु जल समझौता स्थगित रहेगा।

स्पष्ट है कि पाकिस्तान में भारतीय सेना ने भारी तबाही मचायी है, जबकि पाकिस्तान के सहस्रों ड्रोन और मिसाइल बेकार साबित हुए। भारतीय एयर डिफेंस ने उन्हें रास्ते में ही मार गिराया। परन्तु पाकिस्तान को क्या कहिए वहाँ विजय जुलूस निकाले जा रहे हैं। चीन के सरकारी खबरी भी पाकिस्तान को विजयी घोषित कर रहे हैं। परन्तु सत्य तो सत्य होता है, उसे छिपाया नहीं जा सकता। अब न्यूयार्क टाइम्स और वाशिंगटन पोस्ट ने भी सच लिख दिया है। जो लोग विदेशी मीडिया पर ही विश्वास रखते हैं उनको भी अब तसल्ली हो जायेगी, ऐसा प्रतीत होता है।

इस ऑपरेशन की सबसे विशेष बात यह थी कि पाकिस्तान द्वारा दागे गए सैकड़ों ड्रोन आते हुए देखकर भी किसी भारतीय का दिल नहीं दहला। वहाँ भी जहाँ निशाना बनाकर इन आयुधों को दागा गया था। बस सायरन की आवाज सुनते ही पूर्व में दिए निर्देशों की अनुपालना, ब्लैक आउट, और इसके अलावा सामान्य बातचीत जैसे कि कुछ परवाह नहीं। ऐसा क्यों? क्योंकि उनको पता था कि अभी भारतीय डिफेन्स उन्हें समाप्त कर देगा। यह तो रही टार्गेट पर रहे शहरों की बात, बाकी भारत में तो जैसे टेलीविजन पर आतिशबाजी ही देखी जा रही

थी। मेरा पौत्र रोज पूछता है कि पाकिस्तान ने आक्रमण कर दिया क्या? क्यों? क्योंकि उसने भी पाकिस्तान के प्रहार को तिनके की तरह बिखरते देखा है। उसे विश्वास है कि पाकिस्तान फिर आक्रमण करेगा तो पिटने ही वाला है और वह उन क्षणों का फिर से साक्षी बनाना चाहता है। शायद उसके दिल में भी हम सभी की भाँति है 'यह दिल मांगे मोर।'

परन्तु ऐसे अटल विश्वास का श्रेय सेना को तो जाता है पर उससे भी अधिक राजनीतिक नेतृत्व को जिनकी भाव भंगिमा ने ही देशवासियों में यह भरोसा उत्पन्न कर दिया कि 'मैं हूँ न'।

## मेक इन इण्डिया

यह बात गर्व और प्रसन्नता की है कि स्वदेश में निर्मित आयुध इस संघर्ष में विजेता रहे। उनमें से दो की अति संक्षिप्त चर्चा यहाँ कर देना उचित है। सभी को अब ज्ञात है कि पाकिस्तान ने झुण्ड के झुण्ड ड्रोन एवं मिसाइल भारत के सैन्य ठिकानों और एयर बेसों को नष्ट करने भेजे। पर एक भी आक्रमण सफल नहीं हुआ क्योंकि भारत के एयर डिफेन्स सिस्टम ने सबको हवा में ही विनष्ट कर दिया। इसमें रूस निर्मित एस-४०० के बारे में तो सब जानते हैं परन्तु हमारी 'आकाश' ने जो चमत्कार किया है, सैन्य विशेषज्ञ उसकी प्रशंसा करते नहीं थक रहे। दूसरी हमारी 'ब्रह्मोस'। जिसे हमने रूस की तकनीक के साथ विकसित किया है और अभी-अभी लखनऊ में इसके निर्माण की इकाई स्थापित की है। यह ब्रह्मोस ऑपरेशन सिन्दूर में ब्रह्मास्त्र साबित हुआ। आतंक के अड्डों को पाक के एयरबेसों को तबाह करने में इसकी जो भूमिका रही है उसकी आवाज आज तक भी पाकिस्तान के सैन्य अधिकारियों के कानों में गूँज रही है।

यहीं स्वदेश में गत १० वर्षों में जो उपग्रह स्थापित किये हैं उनकी भूमिका की चर्चा यद्यपि कम हुयी है, परन्तु उनके कमाल के सहयोग के बिना ऐसी सफलता संदिग्ध रह सकती थी।

ऑपरेशन सिन्दूर की सफलता में इसरो के सैटेलाइट खासतौर पर RISAT और Cartosat और Navic का बड़ा रोल रहा। इन सैटेलाइटों ने २४ घण्टे निगरानी करके दुश्मन की गतिविधियों की सटीक जानकारी भारतीय सेना को उपलब्ध कराई। हाई रेजोल्यूशन इमेजिंग और अंधेरे में भी काम करने की क्षमता ने मिशन को सफल बनाया।

ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान इन सैटेलाइटों ने भारतीय सेना को दुश्मन की लोकेशन, मूवमेंट और ठिकानों की सटीक जानकारी दी। इसी वजह से भारतीय वायुसेना ने २५ मिनट में टारगेट को सफलतापूर्वक तबाह कर दिया, वो भी बिना लाइन ऑफ कन्ट्रोल पार किए। इसरो की तकनीक की वजह से भारत को आतंकियों और दुश्मन की तकनीकी चाल, डिफेंस एस्टेब्लिशमेंट, रडार, एयर डिफेंस सिस्टम और हथियारों की लोकेशन और स्ट्रैटेजिक तैयारी की पहले से जानकारी मिल गई। ऑपरेशन सिन्दूर ने दिखा दिया कि जब सेना और साइंस साथ चलते हैं, तो देश की सुरक्षा और भी मजबूत हो जाती है। भारत द्वारा विकसित RISAT (Radar Imaging Satellite) और Cartosat एवं Navic सैटेलाइट्स ने देश की सुरक्षा और रणनीतिक तैयारियों को नई ऊँचाई दी है। ऑपरेशन सिन्दूर के सटीक और गोपनीय मिशनों में इनका अहम योगदान रहा है।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

एक रिश्ता बताएँ जो बिना किसी स्वार्थ के अपना तन-मन-धन सब कुछ आप पर वार देता है। एक रिश्ता बताएँ जो आपको अपने से अधिक उन्नति करते देख फूला नहीं समाता। एक रिश्ता बताएँ जो आपका भविष्य बनाने के लिए अपने सपनों की परवाह नहीं करता। एक रिश्ता बताएँ जो हमारी इतनी धृष्टताओं की उपेक्षा कर देता है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। एक रिश्ता बताएँ जिनका रात दिन एक ही स्वप्न हो आपका कल्याण। जी हाँ! इसका एक ही उत्तर है माता-पिता।

यह रिश्ता अद्भुत है। केवल माँ ही तो है जो अपने

# मातृ देवो भव - पितृ देवो भव

भोजन और ऊर्जा को सन्तान के साथ तब सांझा करती है जब अभी उसके जन्म लेने में ६ मास शेष हैं। क्योंकि वही शिशु की एक एक धड़कन को अनुभव करती है। यही नहीं शिशु के विचार निर्माण का कार्य भी माता के गर्भ में हो जाता है।

आपके माता-पिता आपके लिए परमपिता परमात्मा की सर्वकल्याणकारी देन हैं। वे स्वयं चाहे जितनी विपन्न दशा में हों पर आपको संसार में सबसे ऊँचा देखना चाहते हैं।

महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के कागल तालुका के यमगे गाँव में एक चरवाहे के बेटे ने UPSC परीक्षा में ५५१वीं रैंक प्राप्त की। बिरदेव का बचपन बेहद कठिनाइयों भरा रहा। गरीब परिवार, सीमित संसाधन और सिर्फ एक ही सपना-अफसर बनना। पिता की तरह खुद बिरदेव ने भी मवेशी चराए। कभी पहाड़ियों में भेड़ें चराते हुए, तो कभी स्कूल के बरामदे में बैठकर पढ़ाई की। बिरदेव के पिता यद्यपि १२वीं पास थे परन्तु उन्होंने चरवाहे के रूप में जिन्दगी बसर की। परन्तु बेटे को अफसर बनाने का सपना सदा जिन्दा रखा। जब बिरदेव तैयारी के सिलसिले में दिल्ली गया तो कैसे न कैसे पिता १०-१२ हजार रुपये भेज देते थे। बिरदेव के भाई ने भी उसकी सहायता की। जिन्दगी भर एक अनाम चरवाहे के रूप में अनजान सिद्धपा ने आज सर ऊँचा किया और देश के समस्त मीडिया में उसकी और बिरदेव की कहानी गूँजने लगी। माता-पिता वे हैं उनको इससे अधिक कुछ नहीं चाहिए। उनका बेटा अफसर बन गया यह अनुभूति अब श्वास-श्वांस में व्याप्त हो गयी है।

मीरा माता की कहानी सबसे अलग है। वह अपनी तीनों बेटियों को अफसर बनाना चाहती थीं। पति ने जीवन की डोर छोड़ दी। शरीर छोड़ते समय वह बेटियों को अफसर बनाने का सपना ही देख रहे थे। पति की मृत्यु के बाद गाँव वालों ने दबाब डाला कि

बेटियों की शादी करदें। परन्तु मीरा ने किसी की नहीं सुनी.. विधवा माता अब अपने सपने कैसे पूरे करे? परन्तु राजस्थान की इस साहसी महिला ने साहस का दामन नहीं छोड़ा। खेतों में मजदूरी करने लगी। जब उससे भी काम न चला तो बेटा राम सिंघपनी पढ़ाई छोड़ मजदूरी के मैदान में कूद गया। अन्त में इन सब की मेहनत रंग लायी। तीनों बहनें अफसर बन गईं।

वस्तुतः माता-पिता जब तक हमारे जीवन में हैं तभी तक सन्तान चिन्तामुक्त है क्योंकि हर विपत्ति में वे सन्तान को यह अहसास भी नहीं होने देते कि कोई कठिनाई भी है।

महर्षि दयानन्द इसीलिए सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं- 'जब तक हम लोग गृह कर्मो को करने हारे जीते हैं तभी तक तुमको विद्याग्रहण और शरीर का बल बढ़ाना चाहिए।'

वह शिक्षा जिससे जीविका अर्जित हो वह मानव

निर्माण प्रक्रिया से पृथक् है। विशेष मानव निर्माण है। और इसका प्रारम्भ बचपन में ही माता-पिता के द्वारा ही होता है इसीलिए कहा है- **'नास्ति मातृ समो गुरु'** अर्थात् इस संसार में माँ के समान कोई गुरु नहीं है।

महाभारत में यक्ष ने प्रश्न किया- संसार में सबसे भारी क्या है? और सबसे ऊँचा क्या है? तो युधिष्ठिर उत्तर देते हैं **'माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा'** अर्थात् माता पृथ्वी से भारी (गुरुता) है और पिता आकाश से ऊँचा (श्रेष्ठ) है।

यह है हमारे जीवन में माता-पिता का महत्त्व। इसे पूरा समझना शायद सन्तान के लिये आज कठिन हो रहा है अन्यथा माता-पिता को वृद्धाश्रम का रास्ता दिखाने से पहले कुछ चिन्तन अवश्य करते।

महर्षि दयानन्द बालपन से ही शिशु को सिखाना चाहते हैं कि वे माता-पिता की सेवा, उनके प्रति आदर प्रदर्शित करने का स्वभाव बना लें। वे सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं- 'अपने माता-पिता और आचार्य की तन-मन-धनादि उत्तम उत्तम पदार्थों से प्रीतिपूर्वक सेवा करें।' यहाँ सेवा करने का निर्देश है परन्तु प्रीतिपूर्वक करने का निर्देश विशेष है।

आज हो क्या रहा है? नितान्त औपचारिकता।

सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में इसीलिए महर्षि पितृयज्ञ के अन्तर्गत लिखते हैं-

'पितृयज्ञ के दो भेद हैं- एक 'श्राद्ध' और दूसरा 'तर्पण'। श्राद्ध अर्थात् 'श्रत्' सत्य का नाम है, **'श्रत्सत्यं दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा, श्रद्धया यत्क्रियते तच्छ्राद्धम्'** जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाय, उसको 'श्रद्धा' और जो-जो श्रद्धा से सेवारूप कर्म किये जायें, उसका नाम 'श्राद्ध' है। **'तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितॄन् तत्तर्पणम्'** जिस-जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान मातादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जायें, उसका नाम 'तर्पण' परन्तु यह कर्म जीवतों के लिए है, मृतकों के लिये नहीं।

स्पष्ट है कि सन्तान को अपने माता-पिता का प्रतिदिन श्राद्ध और तर्पण करना चाहिए। किसी विशेष पक्ष का अथवा किसी विशेष दिन की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। इसीलिए 'Globle Perent Day' पर यह आलेख है कि माता-पिता की सेवा का कार्य एक दिन नहीं ३६५ दिन और २४ घण्टे करना चाहिए। इसका फल भी अवश्य मिलेगा। भारतीय मनीषा कहती है-

**अभिवादन शीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः।**
**चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्या यशो बलम्॥**

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर

**हमारे** देश की मिट्टी में ऐसे वीरों की कहानी छिपी हुई है जिनके स्मरण मात्र से हर दिल में जोश और साहस का ज्वार उठ जाता है। राम प्रसाद बिस्मिल वह नाम है जिसने अपनी कविताओं और संघर्ष के जरिए भारत की धरती को एक नई दिशा दी। राम प्रसाद बिस्मिल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महान् क्रान्तिकारी, शहीद और कवि थे। जिन्होंने अपने साहस और बलिदान से ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती दी। उनका संघर्ष समर्पण और देशभक्ति का प्रतीक है।

उनका जन्म ११ जून १८५७ को उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले के एक छोटे से गाँव राजपुर में हुआ था। उनका परिवार बेहद साधारण था। लेकिन शिक्षा और संस्कारों की गहरी परम्परा थी। बिस्मिल के पिता का नाम मुरलीधर था जो शाहजहांपुर नगर पालिका में काम करते थे। माँ का नाम मूलमती देवी था। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी फिर भी उन्होंने हर परिस्थिति में शिक्षा को सर्वोपरि माना। बचपन से ही बिस्मिल का झुकाव पढ़ाई की ओर था लेकिन उनकी शिक्षा का प्रारम्भ आमतौर पर गाँव के स्कूल में हुआ था। बहुत छोटी उम्र में ही उन्होंने अपने शेरो शायरी के शौक का प्रदर्शन करना शुरू कर दिया था। उनका दिमाग तेज था और वह बचपन से ही देशभक्ति की कविताएँ लिखने में रुचि रखते थे। राम प्रसाद बिस्मिल के परिवार में साहित्य और धार्मिक संस्कारों का गहरा प्रभाव था। उनकी माँ मूलमती देवी ने उन्हें धार्मिक शिक्षा दी और पिता ने संस्कृत तथा फारसी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अध्ययन कराया। साथ ही घर में प्राचीन भारतीय साहित्य और पुराणों का अध्ययन भी होता था। जिससे बिस्मिल की भारतीय संस्कृति और इतिहास में गहरी रुचि विकसित हुई। इसी बीच उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक का अध्ययन किया और समाज में फैले अंधविश्वास, जातिवाद और मूर्ति पूजा के खिलाफ सोचने लगे और कहा जाता है कि जब उन्होंने इन सब का विरोध किया तो वही क्षण था जब उनके मन में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने का ख्याल आया। आर्य समाज से राम का गहन अनुराग उनके पिता को बिलकुल पसन्द नहीं था। तो उन्होंने कहा कि या तो घर छोड़ दो या आर्य समाज छोड़ दो। वह घर छोड़ने के लिए तैयार हो गए पर आर्य समाज नहीं छोड़ा। बिस्मिल ने अपने शिक्षा जीवन के दौरान कई काव्य रचनाएँ की जिसमें कई शेर और गजलें शामिल थी उन गजलों में उनकी क्रान्तिकारी भावना साफ झलकती है।

'कितनी बार दिल में यह ख्याल आया कि बिस्मिल अब उठो और संघर्ष करो' जैसे विचार उनकी कविताओं में उभरते थे। अगर शिक्षा की बात करें तो पहले गाँव के एक छोटे स्कूल में पढ़े और फिर शाहजहांपुर के एक सरकारी स्कूल में दाखिला लिया और यहीं से उनके क्रान्तिकारी जीवन की शुरुआत हो जाती है। शाहजहांपुर में ही उनकी मुलाकात सोमदेव जी से हुई जो आर्य समाज से जुड़े एक देशभक्त और विचारशील संन्यासी थे। सोमदेव जी ने बिस्मिल जी के विचारों को एक दिशा दी और उन्हें स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों से अवगत कराया जिससे उनके मन में अंग्रेजों के अत्याचार के

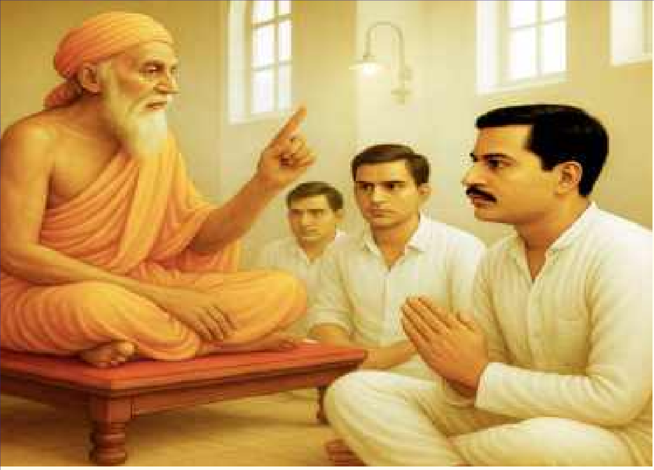

प्रति आक्रोश और देश को स्वतंत्र करने की भावना और प्रबल हो गई। अब बिस्मिल ने आर्य समाज के प्रभाव में आकर ऐसी कविताएँ और क्रान्तिकारी साहित्य लिखा जिसमें राष्ट्रभक्ति और आत्म बल का सन्देश होता था। जैसे 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' 'मेरा रंग दे बसंती चोला' आदि और साथ ही बिस्मिल ने हिन्दुस्तान रिपब्लिक संगठन की स्थापना में अहम भूमिका निभाई। जिसमें आर्य समाज के आत्म बल, निडरता और कर्मयोग की झलक दिखती है। इस संगठन के माध्यम से उन्होंने उत्तर भारत (खासकर उत्तर प्रदेश और बिहार) में क्रान्तिकारियों की भर्ती शुरू की और अनेक युवाओं को जोड़ा। जैसे ठाकुर रोशन सिंह, बनवारी लाल, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, अशफाकुल्ला खान, चन्द्रशेखर आजाद, बटुकेश्वर दत्त आदि। बिस्मिल ने क्रान्तिकारियों में जोश और उद्देश्य को पूरा करने की भावना जागृत करने के लिए कई कविताएँ अनुवाद और पुस्तिकाएँ लिखीं और उन्होंने अंग्रेजी पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद भी किया। जैसे कैथरीन जो रूसी क्रान्ति पर आधारित थी। ब्रिटिश सरकार से लड़ने के लिए उन्हें धन की अत्यन्त आवश्यकता थी जिसके लिए बिस्मिल ने डकैती के जरिए धन जुटाने की योजना बनाई। लेकिन वह हमेशा इसके अहिंसात्मक तरीकों को प्राथमिकता देते थे जिससे आम जनता को कोई नुकसान न पहुँचे और इसी के चलते उन्होंने बमरोली लखनऊ और कुछ अन्य स्थानों पर छोटी डकैतियाँ कीं लेकिन इन सबसे उतना कुछ प्रभाव पड़ा नहीं तो उन्होंने सरकारी खजाने को लूटकर उससे क्रान्तिकारी गतिविधियों को बढ़ाने के लिए काकोरी काण्ड की योजना बनाई। जिसके अनुसार अंग्रेज सरकार की ट्रेजरी जो रेल के जरिए लखनऊ भेजी जाती थी उसे लूटने के लिए १० लोगों की एक टीम तैयार की। जिसमें राम प्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाकउल्ला खान, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, चन्द्रशेखर आजाद, ठाकुर रोशन सिंह, सचिन्द्रनाथ बक्शी, केशव चक्रवर्ती, मुकुंदी लाल, बनवारी लाल, मन्मथ नाथ गुप्त शामिल थे और सबका अलग-अलग काम था। योजना के अनुसार जैसे ही ट्रेन काकोरी स्टेशन के निकट पहुँची तो बिस्मिल ने चेन खींचकर ट्रेन रोक दी और जैसे ही ट्रेन रुकी अशफ़ाकउल्ला खान और राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी ने गार्ड को कब्जे में ले लिया और फिर बिस्मिल व अन्य साथियों ने खजाने वाली बोगी को हथौड़े और लोहे की छड़ों से तोड़ दिया और लगभग ८००० हजार नकद और सोने चाँदी की मुद्राएँ निकाली गई। पूरी कार्यवाही १०-१५ मिनट में पूरी कर ली गई लेकिन दुर्भाग्यवश एक यात्री अहमद अली की गोली लगने से मृत्यु हो गई। जो उनकी योजना में बिल्कुल भी नहीं था। यह एक दुर्घटना थी पर इसके कारण उनकी नैतिक योजना पर एक प्रश्न चिह्न लग गया। दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार इस घटना के बारे में सुनकर बौखला गई और पूरे देश में क्रान्तिकारियों की धरपकड़ होने लगी। बिस्मिल शाहजहांपुर थे वहीं से उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उनके साथ ही अशफाक उल्ला खान के साथ-साथ राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी को भी गिरफ्तार कर लिया गया। चन्द्रशेखर आज़ाद अकेले थे जो पुलिस के हाथ नहीं आए। लखनऊ में मुकदमा चला- जिसे इतिहास में 'काकोरी षड्यंत्र मामला' कहा गया। मुकदमे के दौरान वह एक अपराधी की तरह नहीं बल्कि एक स्वतंत्रता सेनानी की तरह पेश हुए और उन्होंने अपने विचार स्पष्ट करते हुए कहा कि- 'हमने ब्रिटिश सरकार के धन को लूटा, किसी निजी व्यक्ति को नुकसान नहीं पहुँचाया। हम चोर नहीं, स्वतंत्रता के योद्धा हैं।'

पर न्याय नहीं हुआ क्योंकि ब्रिटिश सत्ता बदले की भावना से भरी थी। दिसम्बर १९२७ में राम प्रसाद बिस्मिल के साथ-साथ अशफ़ाकउल्ला खान ठाकुर रोशन सिंह और राजेन्द्र नाथ को भी फांसी की सजा सुनाई गई और अन्य क्रान्तिकारियों को काला पानी की सजा दी गई। १९ दिसम्बर १९२७ को उन्हें फांसी दे दी गई। उनके आखिरी शब्द थे- मैं देश की स्वतंत्रता के लिए मर रहा हूँ। मेरे खून की हर बूँद इस मिट्टी को सींचेगी, और इस देश को आज़ाद कराएगी।

काकोरी काण्ड भले ही एक साजिश के रूप में याद किया गया, लेकिन असल में यह योजना एक वैचारिक युद्ध थी- जिसमें नायकों ने जान देकर आने वाली पीढ़ियों को मार्ग दिखाया।

- सिद्धम आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

# प्रकृति का दोहन हानिकारक

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, जलवायु परिवर्तन से निपटने और जैव विविधता संकट को रोकने के लिए घनघोर प्रयासों की आज नितान्त और फौरी आवश्यकता है। पृथ्वी या सृष्टि के संरक्षण और स्थिरता के लिए जागरूकता पैदा करना इसलिये आवश्यक हो गया है कि जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और वनों की कटाई के कारण प्रकृति एवं पर्यावरण पर गहरे संकट हैं। वर्ष २०२५ में पृथ्वी दिवस का थीम था- 'हमारी शक्ति, हमारा ग्रह', जो यह स्पष्ट करता है कि जलवायु परिवर्तन और हमारे पर्यावरण के दुरुपयोग से निपटने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा की तत्काल आवश्यकता है। हमारे स्वास्थ्य, हमारे परिवारों, हमारी आजीविका और हमारी धरती को एक साथ संरक्षित करने का समय आ गया है। पृथ्वी दिवस आधुनिक पर्यावरण आन्दोलन की वर्षगाँठ का प्रतीक है, जो पहली बार सन् १९७० में मनाया गया था। इसका उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील एवं पृथ्वी के संरक्षण के लिये जागरूक करना है। दुनिया में पृथ्वी के विनाश, प्रकृति प्रदूषण एवं जैविक संकट को लेकर काफी चर्चा हो रही है।

१९० से अधिक देशों को पृथ्वी दिवस में शामिल करते हुए एक वैश्विक आन्दोलन बन गया है, जो प्लास्टिक प्रदूषण, नवीकरणीय संसाधन, ग्लोबल वार्मिंग और टिकाऊ जीवन जैसी प्रमुख पर्यावरणीय चिन्ताओं की ओर ध्यान आकर्षित करता है। वृक्षारोपण, सफाई अभियान, शैक्षिक अभियान वैश्विक स्तर पर सरकारों, संगठनों, स्कूलों और समुदायों द्वारा की जाने वाली गतिविधियों में से हैं। इसका उद्देश्य लोगों को पर्यावरण की दृष्टि से अधिक सही निर्णय लेने तथा पृथ्वी के अनुकूल नीतियों के पक्ष में खड़ा करना है। यह इस बात पर जोर देता है कि आपकी उम्र चाहे जो भी हो या आप कहीं भी रहते हों, आप पृथ्वी को अधिक स्वस्थ और टिकाऊ बनाने में योगदान दे सकते हैं और ऐसा करते हुए शान्ति की स्थापना एवं शान्तिपूर्ण जीवन को सुदृढ़ बना सकते हैं। हमें ऐसे विचारों एवं जीवनशैली को संगठित करना है जो पर्यावरण नीति निर्माता सरकारों को प्रेरित करें ताकि पर्यावरणीय स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने के लिए कानूनों और प्रथाओं में बदलाव हो सके एवं वैज्ञानिक नवाचारों और हरित प्रौद्योगिकियों के विचार को बल देते हुए पर्यावरण को होने वाले नुकसान को कम करने और भविष्य में स्थिरता बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठा सके।

आज विश्वभर में हर जगह प्रकृति का दोहन एवं शोषण जारी है। जिसके कारण पृथ्वी पर अकसर उत्तरी ध्रुव की ठोस बर्फ का कई किलोमीटर तक पिघलना, सूर्य की पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी तक आने से रोकने वाली ओजोन परत में छेद होना, भयंकर तूफान, सुनामी और भी कई प्राकृतिक आपदाओं का होना आदि ज्वलन्त समस्याएँ विकराल होती जा रही है, जिसके लिए मनुष्य ही जिम्मेदार हैं। ग्लोबल वार्मिग के रूप में जो आज हमारे सामने हैं।

नियंत्रण करना होगा, क्योंकि उन्हीं के कारण कार्बन उत्सर्जन और दूसरी तरह के प्रदूषण में बढ़ोतरी हुई है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कई प्रजाति के जीव-जन्तु, प्राकृतिक स्रोत एवं वनस्पति विलुप्त हो रहे हैं, जिससे पृथ्वी असंतुलित हो रही है। विलुप्त होते जीव-जन्तु और वनस्पति की रक्षा के लिये विश्व-समुदाय को जागरूक करने के लिये ही इस दिवस को मनाया जाता है।

आज चिन्तन का विषय न तो रूस-यूक्रेन युद्ध है, न अमेरिका का टैरिफ वार है और न मानव अधिकार, न कोई विश्व की राजनैतिक घटना और न ही किसी देश की रक्षा का मामला है। चिन्तन एवं चिन्ता का एक ही मामला है लगातार विकराल एवं भीषण आकार ले रही गर्मी, सिकुड़ रहे जलस्रोत, विनाश की ओर धकेली जा रही पृथ्वी एवं प्रकृति के विनाश के प्रयास। बढ़ती जनसंख्या, बढ़ता प्रदूषण, नष्ट होता पर्यावरण, दूषित गैसों से छिद्रित होती ओजोन की ढाल, प्रकृति एवं पर्यावरण का अत्यधिक दोहन- ये सब पृथ्वी एवं पृथ्वीवासियों के लिए सबसे बड़े खतरे हैं और इन खतरों का अहसास करना ही विश्व पृथ्वी दिवस का ध्येय है। प्रतिवर्ष धरती का तापमान बढ़ रहा है। आबादी बढ़ रही है, जमीन छोटी पड़ रही है। हर चीज की उपलब्धता कम हो रही है। ऑक्सीजन की कमी हो रही है। साथ ही साथ हमारा सुविधावादी नजरिया एवं जीवनशैली पृथ्वी और उसके पर्यावरण एवं प्रकृति के लिये एक गम्भीर खतरा बन कर प्रस्तुत हो रहा है।

जल, जंगल और जमीन इन तीन तत्वों से पृथ्वी और प्रकृति का निर्माण होता है। यदि यह तत्व न हों तो पृथ्वी और प्रकृति इन तीन तत्वों के बिना अधूरी है। विश्व में ज्यादातर समृद्ध देश वही माने जाते हैं जहाँ इन तीनों तत्वों का बाहुल्य है। आधुनिकीकरण के इस दौर में जब इन संसाधनों का अंधाधुन्ध दोहन हो रहा है तो ये तत्व भी खतरे में पड़ गए हैं। अनेक शहर पानी की कमी से परेशान हैं। कत्लखानों में कटती गायों की निरीह आहें जिसे बेचैन कर देती थीं,

ये आपदाएँ पृथ्वी पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव-जन्तु व वनस्पति का अस्तिव ही समाप्त हो जाएगा। जीव-जन्तु अन्धे हो जाएँगे। लोगों की त्वचा झुलसने लगेगी और कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ जाएगी एवं अनेक नयी-नयी व्याधियाँ रह-रहकर जीवन संकट का कारण बनती रहेगी। इसीलिये विश्व पृथ्वी दिवस की आज ज्यादा प्रासंगिकता एवं उपयोगिता है। यह दीर्घकालिक परिवर्तन को संभव बनाने की दिशा में काम करेगा क्योंकि यह पर्यावरण जागरूकता की संस्कृति को विकसित करता है और वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को पृथ्वी का सक्रिय संरक्षक बनने के लिए सशक्त बनाता है।

जिस पृथ्वी को हम माँ का दर्जा देते हैं उसे हम खुद अपने ही हाथों दूषित करने में कैसे लगे रहते हैं? आज जलवायु परिवर्तन पृथ्वी के लिए सबसे बड़ा संकट बन गया है। अगर पृथ्वी के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लग जाए तो मानव जीवन कैसे सुरक्षित एवं संरक्षित रहेगा? पृथ्वी है तो सारे तत्व हैं, इसलिये पृथ्वी अनमोल तत्व है। इसी पर आकाश है, जल, अग्नि, और हवा है। इन सबके मेल से प्रकृति की संरचना सुन्दर एवं जीवनमय होती है। अपने-अपने स्वार्थ के लिए पृथ्वी पर अत्याचार रोकना होगा और कार्बन उत्सर्जन में कटौती पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। अतिशयोक्तिपूर्ण ढ़ंग से औद्योगिक क्रान्ति पर

जो वन्य पशु-पक्षियों को खदेड़कर अपनी बस्तियाँ बनाने का बौना स्वार्थ नहीं पालता था, अब वही मनुष्य अपने स्वार्थ एवं सुविधावाद के लिये सही तरीके से प्रकृति का संरक्षण न कर पा रहा है और उसके कारण बार-बार प्राकृतिक आपदाएँ कहर बरपा रही हैं। रेगिस्तान में बाढ़ की बात अजीब है, लेकिन हमने राजस्थान में अनेक शहरों में बाढ़ की विकराल स्थिति को देखा है। वह दिन दूर नहीं होगा, जब हमें शुद्ध पानी, शुद्ध हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध वातावरण एवं शुद्ध वनस्पतियाँ नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा।

आज पॉलीथीन पृथ्वी के लिये सबसे बड़ा सिरदर्द बन गई है। इसके नष्ट न होने के कारण भूमि की उर्वरक क्षमता खत्म हो रही है। इनको जलाने से निकलने वाला धुआँ ओजोन परत को भी नुकसान पहुँचाता है जो ग्लोबल वार्मिंग का बड़ा कारण है। देश में प्रतिवर्ष लाखों पशु-पक्षी पॉलीथीन के कचरे से मर रहे हैं। हमें वर्षा के जल को पुनः उपयोग में लाने वाली प्रणाली को विकसित करना होगा। हमें बिजली की बर्बादी को भी रोकना होगा अन्यथा वह दिन दूर नहीं है जब हम अंधेरे में ही अपना जीवन-यापन करने को मजबूर हो जायेंगे। हमें कागज के उपयोग को सीमित करना होगा, क्योंकि कागज पेड़ों की लकड़ी से बनता है जिसके लिए हमें बड़ी संख्या में पेड़ काटने पड़ते हैं। आजकल भूमि भी जहरीली होती जा रही है जिससे उसमें उगने वाली वनस्पतियों में विषाक्तता बढ़ती जा रही है। प्रकृति से सहज रिश्ता कायम हो। जीवन शैली में बदलाव आये। हर क्षेत्र में संयम की सीमा बने। हमारे दिमागों में भी जो स्वार्थ एवं सुविधावाद का शैतान बैठा हुआ है, उस पर अंकुश लगे। अन्यथा निकट भविष्य में मानव सभ्यता का अन्त दिखाई दे रहा है।

लेखक- ललित गर्ग

## आजीवन सत्यार्थ मित्र

**सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा।समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।**

### सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

**1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।**

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संयुक्तमंत्री-न्यास

# सुख-दुख का स्वरूप मन के अनुरूप

शेक्सपियर कहते हैं- 'देयर इज़ नथिंग आइदर गुड ऑर बैड, बट थिंकिंग मेक्स इट सो' अर्थात् इस संसार में कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं है अपितु यह हमारी सोच है जिसके कारण कोई चीज अच्छी या बुरी लगती है। हमारी सोच ही किसी भी स्थिति, घटना, वस्तु या व्यक्ति को अच्छा या बुरा बनाती है। वास्तविक जीवन में क्या घटित हो रहा है इससे अधिक महत्त्व इस बात का है कि मन में क्या घटित हो रहा है। उर्दू शायर जगन्नाथ 'आजाद' कहते हैं-

**दीद का ज़ौक़ है ऐ दोस्त! चमन में वरना,**
**न कोई फस्ले-बहाराँ न ख़िज़ाँ होती है।**

एक समय विशेष में सम्पूर्ण विश्व, किसी राष्ट्र विशेष अथवा स्थान विशेष की स्थिति एक निश्चित स्वरूप में ही होती है लेकिन कुछ लोगों के लिए यह सम तथा कुछ लोगों के लिए विषम होती है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के मन में उस स्थिति विशेष की स्वीकृति भिन्न-भिन्न प्रकार से होती है क्योंकि सुख हो या दुःख वह व्यक्ति सापेक्ष होता है। एक ही घटना किसी को सुखद प्रतीत होती है तो किसी को दुःखद। आखिर ऐसा क्यों होता है? आइए शरीर में सुख और दुःख के स्थान का पता करें।

शरीर में सुख और दुःख का स्थान कहाँ है? दुःख होने पर क्या हाथ पैर या आँख दुःखी होती है अथवा यकृत, फेफड़े या गुर्दे दुःखी होते हैं? शरीर का कौन-सा अंग दुःखी या सुखी होता है? यदि शरीर का कोई अंग विशेष दुःखी होता तो डॉक्टर उस अंग विशेष की चिकित्सा करके आपको सुखी कर देता। आपके शरीर के समस्त अंग-प्रत्यंग स्वस्थ हैं सारी प्रणालियाँ बखूबी कार्य कर रही हैं। आपकी नब्ज ठीक चल रही है, ब्लड प्रेशर सामान्य है। रक्त शर्करा तथा कॉलेस्ट्रोल भी पूर्ण नियंत्रण में हैं। इसके बावजूद आप सुखी नहीं। आपके दुःखों का पारावार नहीं। वास्तव में दुःखी आपका भौतिक शरीर नहीं होता, दुःखी होता है मानसिक शरीर अर्थात् मन।

आपके प्रिय पुत्र या पुत्री को पैर में चोट लग गई लेकिन दर्द हो रहा है आपको। कहाँ? टाँग में? नहीं, दर्द भौतिक अथवा पदार्थ शरीर में नहीं अपितु दर्द हो रहा है अपदार्थ शरीर में और यह अपदार्थ शरीर है मन। वेदना, संवेदना अथवा सहवेदना सब मन के स्तर पर ही तो घटित होती हैं। एक सुन्दर दृश्य

अथवा एक चटक रंग के फूल को देखकर सुख की अनुभूति होती है तो वहीं किसी मृत, रोगी अथवा विध्वंस को देख कर दुःख एवं विषाद की अनुभूति होना स्वाभाविक है। फूल को देखकर मन प्रसन्न हो जाता है चाहे उसमें खुशबू भी न हो।

सुख या दुःख न तो भौतिक शरीर की अवस्था है, न कि लाभ-हानि की। न दुर्घटना से इसका सम्बन्ध है और न सम्बन्धों की स्थिति से। सुख या दुःख तो घटनाओं पर मन की प्रतिक्रिया है। मन गलती से भी अच्छा मान बैठे तो सुख अन्यथा दुःख। शरीर में चोट लग जाए तो पीड़ा होती है दुःख नहीं। आपको कोई रोग है, ऑपरेशन करना पड़ा तो पीड़ा भी हुई लेकिन दुःख नहीं अपितु सुख की अनुभूति ही हुई कि चलो रोग से मुक्ति मिल गई।

प्रसव पीड़ा को भला किसने दुःख माना है? प्रसव पीड़ा तो मानव जाति के अस्तित्व के लिए अनिवार्य

है। हाँ, प्रसव पीड़ा तो झेल लेते हैं लेकिन प्रसव के उपरान्त मनचाही सन्तान पैदा हुई तो सुख ही नहीं परमानन्द अन्यथा प्रसूता से अधिक दुःख घर के दूसरे सदस्यों को होता है। माथा पकड़कर धम्म से वहीं जमीन पर गिर पड़ती है सास। ये हमारी वर्तमान सामाजिक स्थिति है। हम सुख नहीं दुःख मोल लेने और देने की कला में माहिर हैं।

ये भी जरूरी नहीं कि सुख-दुःख किसी घटना पर ही आधरित हो। यदि सुख-दुःख किसी घटना पर आधारित होता तो उस घटना के घटित होते ही फौरन सुख या दुःख भी घटित हो जाता। वास्तव में सुख-दुःख तब होता है जब घटना का पता चलता है। कई बार किसी घटना के घटित होने पर इतनी देर बाद सूचना मिलती है कि सुखी या दुःखी होने का कारण ही समाप्त हो चुका होता है। इस सम्बन्ध में हिमांशु जोशी की कहानी 'साए' पठनीय है।

इसके विपरीत कई बार किसी सम्भावित घटना को लेकर भी हम दुःख मोल ले लेते हैं। वास्तव में हमारे दुःखों का मुख्य कारण सम्भावित घटनाएँ ही होती हैं और वे घटनाएँ जो शायद ही कभी घटित होती हों। कई बार भ्रान्ति के कारण भी सुख या दुःख की अनुभूति हो जाती है। किसी की मृत्यु या दुर्घटना की गलत सूचना पाकर भी हमारा दुःखी होना स्वाभाविक है। घटना घटी नहीं और हम दुःखी हो गए। घटना का कारण उपस्थित नहीं और हम दुःखी हो गए। सुख-दुःख का कारण घटना के प्रति ही प्रतिक्रिया नहीं अपितु मात्र सूचना के प्रति प्रतिक्रिया भी है।

कई बार दुःख का कोई कारण उपस्थित नहीं होता और हम दुःखी हैं भी नहीं। किसी मित्र ने मजाक किया और हम मुस्करा के रह गए। थोड़ी देर बाद दूसरे मित्र ने इशारे से समझाया, 'बात बहुत कड़ी थी। अपमानजनक भी। साले की हिम्मत कैसे हुई? मैं तो खून का घूँट पीकर रह गया।' मित्र तो इतना कहकर चले गए पर हमारे मन में दुःख के बीज बो गए। ऐसे ही असंख्य काल्पनिक दुःखबीजों से भरा पड़ा है हमारा जीवन।

फूल को देखकर हम प्रसन्न हो जाते हैं चाहे उसमें खुशबू भी न हो। आज हजार रुपए का लाभ हो गया तो सुख, पाँच सौ की हानि हो गई तो दुःख। बटुआ नोटों से भरा है पाँच सौ का एक नोट गिर गया पता भी नहीं चला न दुःख हुआ न सुख। दुःख या सुख मन की स्थितियाँ हैं हानि या लाभ की नहीं। बहरहाल कोई भी स्थिति अच्छी या बुरी नहीं होती। कोई भी स्थिति अच्छी या बुरी होती है तो वह होती है मन की प्रतिक्रिया के कारण और मन प्रतिक्रिया करता है

कंडीशनिंग के कारण। सुख अथवा दुःख के लिए बचपन से ही हमारे मन की कंडीशनिंग हो जाती है। प्रश्न उठता है कि मन की कंडीशनिंग कैसे होती है? हमारे मन की कंडीशनिंग होती है हमारे संस्कारों से। हमारा परिवेश और हमारी शिक्षा-दीक्षा हमारे मन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। हमारी धार्मिक निष्ठा, हमारा खान-पान, हमारी आजीविका के साधन, हमारी सामाजिक स्थिति तथा विभिन्न क्षेत्रों में हमारे विश्वास ही ऐसे तत्त्व हैं जो हमारे मन और हमारी सोच को प्रभावित करते हैं, हमारे सुख-दुःख के मानदण्ड निर्धारित करते हैं। समय परिवर्तन के साथ इन मानदण्डों में भी परिवर्तन होता रहता है।

एक बच्चा जिन परिस्थितियों में सुख या दुःख का अनुभव करता है एक युवक के लिए वो परिस्थितियाँ भिन्न हो जाती हैं। एक विवाहित और अविवाहित के सुख-दुःख की अनुभूति के मानदण्ड अलग-अलग पाए जाते हैं। महिलाओं और पुरुषों में भी सुखी या दुःखी होने के काफी भिन्न-भिन्न कारण पाए जाते हैं। महिलाओं को प्रायः सास की बीमारी नाटक और अपनी माँ की बीमारी घातक लगती है। पुरुषों को मित्रों की पत्नियाँ अधिक सलीकेदार और सेंस ऑफ ह्यूमर वाली प्रतीत होती हैं। इसका कारण भी मन की ही एक वृत्ति है और वो है अतृप्त कामना।

स्वामी चिन्मयानन्द कहते हैं कि व्यक्ति के कष्ट उसके जीवन की वास्तविक घटनाओं पर आधारित न होकर उस व्यक्ति के मानसिक विन्यास पर निर्भर करते हैं। स्वामी जी आगे कहते हैं कि दुःख एक मनःस्थिति है जो कि किसी व्यक्ति की पसन्द की वस्तु के अभाव में उत्पन्न होती है। हम सुखी या दुःखी होते हैं क्योंकि हम हमेशा एक विशिष्ट अपेक्षित परिणाम ही चाहते हैं। जब अपेक्षित परिणाम मिलता है तो हम सुख का अनुभव करते हैं अन्यथा दुःख का। अपेक्षित परिणाम के प्रति हठ या दुराग्रह राग कहलाता है। यही राग जीवन में बन्धन और हमारे दुःखों का सबसे बड़ा कारण है। तभी तो अज़ीज़ 'एजाज़' साहब फर्माते हैं-

**जैसा दर्द हो वैसा मंज़र होता है,**
**मौसम तो इंसान के अन्दर होता है।**

माइंडफुल मेडिटेशन के प्रवर्तक 'तिक न्यात हान्ह' का कहना है कि हमारा मन एक हजारों चैनलों वाले टीवी सेट के समान है और हम जिस चैनल को चालू करते हैं उस क्षण हम वही चैनल हो जाते हैं। क्रोध के चैनल का चुनाव करने पर हम क्रुद्ध तथा शान्ति और प्रसन्नता के चैनल का चुनाव करने पर हम शान्त और प्रसन्नचित्त हो जाते हैं। उत्साह और स्वास्थ्य के चैनल का चुनाव करने पर ही हमारा उत्साहपूर्ण और स्वस्थ तथा रोगमुक्त होना सम्भव है। हम सब में चैनल का चुनाव करने की योग्यता है और हम वही तो हैं हम जिस चैनल का चुनाव करते हैं।

हम मन के किसी भी चैनल का चुनाव कर सकते हैं। बुद्ध भी एक चैनल है तो विमूढ़ता भी एक चैनल है। स्मृति भी एक चैनल है तो विस्मृति भी एक चैनल है। शान्ति भी एक चैनल है तो अशान्ति भी एक चैनल है। करुणा अथवा मैत्री भी एक चैनल है तो राग अथवा द्वेष भी एक चैनल है। मन की किसी भी एक स्थिति से दूसरी स्थिति में परिवर्तन उतना ही सरल है जितना एक चैनल से दूसरे चैनल में परिवर्तन। रिमोट का बटन दबाइए और दुःख के चैनल को बन्द करके सुख के चैनल को चालू कर दीजिए। यह उतना ही सरल है जितना एक फिल्म के चैनल से खेल के चैनल में परिवर्तन। लेकिन हमारी उँगलियाँ चंचल हैं। बार-बार दुःख के चैनल का बटन दब जाता है।

हम चाहें तो दुःख के चैनल को हमेशा के लिए लॉक कर सकते हैं। जरूरत है तो थोड़े अभ्यास की। मन पर नियंत्रण की। मन को अपना दास बनाने की। सही बटन न दबा पाने के कारण ही हम उम्र भर वो चैनल देखते रहने को विवश हैं न तो जिसकी भाषा ही हमारे पल्ले पड़ती है और न जिसका हमारे साहित्य, संस्कृति और कला से ही कुछ लेना-देना है। मन रूपी टीवी का सही बटन न दबा पाने अथवा मन की गलत कंडीशनिंग या नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण ही हम आजीवन दुःखी बने रहते हैं जबकि इसके विपरीत कुछ लोग सदैव सुखी बने रहते हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण अथवा मंगल भावना ही सुख है और नकारात्मक दृष्टिकोण अथवा विकृत भावना

ही दुःख इसमें कोई सन्देह नहीं।

## ध्यान परिवर्तन द्वारा दुःख का रूपान्तरण

यथार्थ में ज्यादातर दुःख मनगढ़ंत और काल्पनिक होते हैं। जो व्यक्ति इस सच्चाई को जान लेता है कि मैं वस्तुतः चेतना स्वरूप हूँ और पदार्थ के साथ मेरा सम्बन्ध दिखावामात्र है तो वह कभी दुःखी नहीं होता। वह लाभ-हानि जैसी परस्पर विरोधी परिस्थितियों में सम रहता है। अतः सुख-दुःख से ऊपर उठने का एकमात्र उपाय है स्वयं को जानना। जब व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप से अवगत हो जाता है तो वह भौतिक जगत् की वस्तुओं से निस्पृह हो जाता है। राग-द्वेष से ऊपर उठकर समता में स्थित हो जाता है। चित्त की शुद्धता अथवा शुद्ध धर्म का पालन इसमें सहायक होता है। यह ध्यान परिवर्तन का ही एक रूप है। यदि हम अपने मन को दुःख के स्थान से हटाकर अन्यत्र लगा देते हैं तो उससे दुःखों से बचने में सहायता मिलती है। इस प्रकार ध्यान का परिवर्तन समस्याओं और चिन्ताओं से निकलने का अच्छा मार्ग है। इसमें ध्यान को अनचाही स्थिति से हटाकर अन्यत्र लगाया जाता है। ध्यान को अन्यत्र कहाँ लगाया जाए ये भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं। यदि ध्यान किसी दूसरी बड़ी समस्या या चिन्ता पर जा टिका तो ऐसे ध्यान परिवर्तन का क्या लाभ? ध्यान को किसी सुखद स्मृति या कल्पना में लगाना ही श्रेयस्कर होगा। सुख की कल्पना सुखी जीवन तथा दुःख की कल्पना दुःखी जीवन। धीरे-धीरे यही कल्पना लोक वास्तविकता में परिवर्तित होकर हमारा स्थायी सुख या दुःख बन जाता है।

फिल्म देवदास में जब देवदास को बार-बार खाँसी आ रही है तो चन्द्रमुखी देवदास को कोई ऐसी बात कह देती है जिससे देवदास का ध्यान पूरी तरह चन्द्रमुखी व कथित घटना पर केन्द्रित हो जाता है और उसकी खाँसी रुक जाती है। इस पर चन्द्रमुखी कहती है कि ध्यान बदल जाए तो गहरे से गहरा जख्म भी फौरन भर जाता है देवबाबू। वास्तव में जब भी हम दूसरे किसी कार्य में पूरी तरह डूब जाते हैं तो हमारा ध्यान वर्तमान परिदृश्य अथवा अवांछित कष्टप्रद अनुभूतियों से हट जाता है और इस प्रकार हम वर्तमान चिन्ताओं और परेशानियों से मुक्त हो जाते हैं।

जब ध्यान किसी सुखद स्मृति या कल्पना पर केन्द्रित हो जाता है तो इस परिवर्तित मानसिक अवस्था में जो सुख या आनन्द की अनुभूति होती है वह स्वास्थ्यप्रद होती है। वह हमारे तनाव के स्तर को कम करने में सहायक होती है। ऐसी अवस्था में हमारे शरीर में लाभदायक रसायनों का उत्सर्जन प्रारम्भ हो जाता है जो हमारे उत्तम स्वास्थ्य तथा रोगमुक्ति के लिए अनिवार्य है। ध्यान को विगत की सुखद घटनाओं के अलावा किसी सुखद कल्पना पर भी लगाया जा सकता है। यह ध्यान का सर्वोत्तम रूपान्तरण है जो न केवल वर्तमान समस्या से मुक्ति दिलाता है अपितु हमारी कल्पना को वास्तविकता में परिवर्तित कर मनचाही स्थितियों के निर्माण में भी सहायक होता है। प्रश्न उठता है कि मनचाही स्थितियों का निर्माण कैसे होता है? यहाँ आकर्षण का नियम काम करता है। हमें जो चीजें अच्छी लगती हैं हम उन्हीं की ओर आकर्षित होते हैं। इसी प्रकार से हम जैसी कल्पना करते हैं वैसी ही स्थितियाँ हमारी ओर आकर्षित होती हैं और वास्तविकता में परिवर्तित हो जाती हैं। हम दुःख की कल्पना करके दुःख को तथा सुख की कल्पना करके सुख को आकर्षित करते हैं। इसलिए अनिवार्य है कि यदि हम सुखी होना चाहते हैं तो केवल सुख, समृद्धि, अच्छे स्वास्थ्य व सबसे अच्छे सम्बन्धों की कल्पना करें। हम स्वयं के कल्याण की कामना करें। स्वयं के कल्याण की कामना के साथ-साथ सबके कल्याण की कामना करें। हमारे आर्ष ग्रन्थों में भी तो यही कामना की गई है-

**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।**
**सर्वे भद्राणि पश्यन्तु**
**मा कश्चिद्दुःख भाग्भवेत्।**

- सीताराम गुप्ता
ए.डी. १०६ सी., पीतमपुरा
दिल्ली - ११००३४, चलभाष- ९५५५६२२३२३

सावधान! दो मिनट का क्रोध भी हमारे मधुर सम्बन्धों में जहर घोल सकता है। क्रोध हमारे भीतर उठने वाला एक ऐसा संवेग है जो क्षणभर में जागता है और क्षणभर में शान्त हो जाता है। मनुष्य अपने होश- हवास खोकर कुछ समय के लिए एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ वह क्रोध के वशीभूत होकर अपनों और परायों दोनों को नुकसान पहुँचाता है। मैंने इसे क्षणिक संवेग इसलिए कहा क्योंकि कई बार एक पल के लिए व्यक्ति आवेश और आक्रोश में आकर कोई भी निर्णय या कार्य कर बैठता है, पर कुछ पल के बाद ही आत्मविवेक जगने पर उसके हाथ में पश्चाताप के अलावा कुछ भी नहीं बचता।

### क्रोध एक : नुकसान अनेक

मैं कई बार सोचा करता हूँ कि क्या धरती पर कोई ऐसा मनुष्य है जिसने अपनी जिन्दगी में कभी क्रोध न किया हो? ऐसे ब्रह्मचारी साधक तो मिल जाएँगे जिन्होंने कभी काम का सेवन नहीं किया हो पर 'क्रोध' तो 'काम' विजेताओं पर भी विजय प्राप्त कर लेता है। सच्चाई तो यह है कि जब आप क्रोध के नियंत्रण में होते हैं तो स्वयं का नियंत्रण खो देते हैं। सावधान! एक पल का क्रोध आपके पूरे भविष्य को बिगाड़ सकता है। जिन सम्बन्धों को मधुर बनाने में हमें दस वर्ष तक एक दूसरे को सेटिस्फाइड करना पड़ता है वहीं हमारा दस मिनट का गुस्सा उन सम्बन्धों पर पानी फेर सकता है। सफलता के बढ़ते हुए कदमों में केले के छिलके का काम करता है हमारा गुस्सा। हमारा क्रोध हमें सफलता से हाथ धोने के लिए मजबूर कर देता है। २४ घण्टे भोजन करके हम जो शक्ति अपने शरीर में पाते हैं, कुछ मिनट का गुस्सा उस शक्ति को क्षीण कर देता है। जो बच्चे बचपन में ज्यादा गुस्सा करते हैं, बड़े होने पर उनका दिमाग कमजोर हो जाता है।

### बाहर मुस्कान तो घर में क्रोध क्यों ?

कुछ लोगों की कुछ विचित्र आदत होती है। वे बाजार में, ऑफिस में, दुकान में या दोस्तों के बीच सदा प्रसन्न और मुस्कुराते रहेंगे पर घर पहुँचते ही गम्भीर और गुस्से से भरे हुए हो जाएँगे। वे छोटी-छोटी बातों पर घर में गुस्सा करेंगे और घर की शान्ति को भंग करेंगे। आप घर में बड़े हैं तो उसका अर्थ यह नहीं है कि हर समय आप हो-हल्ला करें या अपने बड़प्पन को जताने के लिए घर के वातावरण को कलुषित करें। आपकी बड़ाई इसमें है कि आप घर में अपने परिवार के सदस्यों को इतना प्रेम दें कि वे आपके जाने पर आपकी शीघ्र पुनर्वापसी की कामना करें। आप नहीं जानते कि आप बार-बार गुस्सा करके

अपने खुशहाल घर को नरक बना देते हैं और परिवार का हर सदस्य भीतर ही भीतर आप से टूटा रहता है। फिर स्थिति यह होती है कि जब आप सामने होते हैं तो सब लोग आपसे दबे रहते हैं और आपके बाहर जाने पर आपकी मजाक उड़ाई जाती है पत्नी कहती है, 'छोड़ो, अब उनकी बातों पर कौन ध्यान दे क्योंकि 'होहल्ला' करना तो उनकी आदत ही बन गई है।'

### क्रोध करें, मगर सात्विक

हमारा क्रोध तीन तरह का होता है सात्विक, राजसिक और तामसिक। घर की मर्यादाओं को बनाए रखने के लिए अथवा औरों की भलाई के लिए किया जाने वाला क्रोध सात्विक क्रोध होता है। इसमें व्यक्ति औरों को सुधारना चाहता है पर किसी का नुकसान करके नहीं। व्यक्ति का दूसरा गुस्सा होता है राजसिक जो अहंकारमूलक क्रोध होता है। मैंने कहा और तुमने नहीं माना यानी आपके अहंकार की सन्तुष्टि नहीं हुई इसलिए आपको क्रोध आया है। तीसरा क्रोध होता है तामसिक यानी ऐसा गुस्सा जो व्यक्ति केवल दूसरों को नीचा दिखाने के लिए करता है इसमें व्यक्ति दस लोगों के बीच सामनेवाले को खरी-खोटी सुनाता है और उसकी दो कमजोरियों को भी सब लोगों के सामने व्यक्त करता है।

### उपेक्षाः क्रोध की जननी

जब व्यक्ति की अपेक्षा उपेक्षित होती है तो उसे क्रोध आता है। अपेक्षा और क्रोध का गहरा रिश्ता है। पता ही नहीं लगता कि थोड़ा-सा उपेक्षित होते ही व्यक्ति कितना विकराल रूप ले लेगा? पहले हम सम्बन्ध बढ़ाते हैं और फिर सम्बन्धों में अपेक्षा पालते हैं। जब-जब अपेक्षा उपेक्षित होती है तब-तब व्यक्ति को बुरा लगता है। फिर सम्बन्धों में दरार पड़नी शुरू हो जाती है।

### ईगो को कहें गो

व्यक्ति के अहंकार को जब चोट लगती है तो उसे गुस्सा आता है जब तक तुम्हारा अहंकार संतुष्ट होता रहेगा, तुम सामने वाले से खुश ही रहोगे किन्तु अहंकार को चोट लगते ही तुम गुस्सा कर बैठोगे। अहंकार क्रोध का पिता है। क्रोध का एक और भी कारण है और वह है 'आलोचना'। किसी ने अगर हमारे लिए विपरीत टिप्पणी कर दी तो हम तत्काल गुस्सा कर बैठेंगे। लोगों का तो काम है औरों पर अंगुलियाँ उठाना और दूसरों की बातें करना। जब भी दो-चार लोग आपस में बात करते हैं तो वे दूसरों के लिए हमेशा विपरीत टिप्पणी किया करते हैं। परिणामस्वरूप मामला सुलझने की बजाय और भी अधिक उलझ जाता है।

### सॉरी कहें, सुखी रहें

अगर किसी कारणवश कभी झगड़ा भी हो जाए तो वह केवल विचारों के पारस्परिक टकराव से ही होता है और फिर वह विकराल रूप लेकर आपके जीवन

को प्रभावित भी कर सकता है। ऐसी स्थिति में दो में से अगर एक व्यक्ति अपने मन के आवेग को नियन्त्रित रखता है तो मामला जल्दी शान्त हो जाता है। आप झगड़े को टालने की कोशिश करें और यदि कोई छोटी-सी बात हो तो 'सॉरी' कहकर सलटा लें। अगर हमारे झुकने से मामला शान्त हो रहा हो तो झुकना बुरी बात नहीं है।

जिस बात को आप गुस्से में भरकर कड़वे शब्दों में कह रहे हैं, दो पल ठहरें अपने हृदय को प्रेम से भरकर उसी बात को मधुर शब्दों में कहने की

कोशिश करें। आपकी बात और अधिक प्रभावपूर्ण हो जाएगी।

### सहन करें, कड़वे बोल

औरों के द्वारा गलती करने पर उन्हें प्रेम से समझाने की कोशिश करें। अगर आप ऑफिस पहुँचे और पहुँचते ही किसी बात पर अपने कर्मचारियों पर झल्लाने लगते हैं तो कर्मचारी यही सोचेंगे कि 'लगता है 'बॉस' आज बीवी से लड़कर आए हैं।' अतः वहाँ न चली तो यहाँ चला रहे हैं। घर का गुस्सा ऑफिस में न ले जाएँ और ऑफिस का गुस्सा घर पर न उतारें।

### क्रोध–मुक्ति के टिप्स

क्रोध मुक्ति के लिए पहला सूत्र है, 'कल पर टालो किसी की गलती या विपरीत टिप्पणी को।' आपको गुस्सा आ गया तो मैं कहूँगा कि आप अपने क्रोध को अवश्य प्रकट करें पर इसकी लपट कहीं आपको न जला बैठे, अतः आप अपने गुस्से को चौबीस घण्टे के बाद व्यक्त करें। जब भी गुस्सा आए, तत्काल उस पर विवेक का अंकुश लगाएँ और उसे कल पर टाल दें। कम-से-कम आधा एक घण्टे के लिए तो टाल ही दें। अन्यथा हो सकता है गलती किसी और ने की हो और आप सीमा से ज्यादा गुस्सा कर बैठें तो वह गलती का प्रायश्चित करे या न करे पर आपको गुस्से का प्रायश्चित करना पड़ सकता है।

क्रोध हमारी समझदारी को बाहर निकाल कर उस पर चिटकनी लगा देता है। जब आप चौबीस घंटे के बाद अपने गुस्से को व्यक्त करेंगे तो वह क्रोध भी होश और बोधपूर्वक होगा। फिर आप जब अपनी बात को व्यक्त भी करेंगे तो विपरीत वातावरण से बचेंगे। क्रोध करो मगर समझपूर्वक।

### स्वयं को अनुपस्थित समझें

क्रोध से बचने के लिए दूसरे प्रयोग को भी अपनाया जा सकता है और वह है 'स्वयं को अनुपस्थित समझो।' जब भी विपरीत वातावरण पैदा हो, आप यह सोचें कि अगर मैं यहाँ नहीं होता तो उन सब बातों का जवाब कौन देता? आपका यह विवेक आपको निश्चय ही क्रोध के वातावरण से बचा लेगा।

### याद करें परिणाम

क्रोध-मुक्ति के लिए अगला उपाय है 'परिणाम को याद करो' क्योंकि पहले भी जब कलुषित वातावरण बना था तो आप चीखे चिल्लाये थे और बात बहुत ज्यादा बिगड़ गई थी। और तो और, आप जिस पत्नी से आजीवन प्रेम निभाने की सोच रहे थे उससे आप तलाक लेने की सोचने लगे हैं। जिस प्रेमिका पर आप अपनी जान न्यौछावर कर रहे थे, उसी पर तेजाब फेंक बैठे। जिससे आप बात करने के लिए तरसते थे, आज उससे बात करने को तैयार नहीं हैं। जिसे घण्टों निहारा करते थे आज वह फूटी आँख भी नहीं सुहाता है।

### गुस्सा करें, मगर प्यार से

क्रोध-मुक्ति का एक और उपाय है- 'बोध पूर्वक बोलो और कार्य करो।' अगर आपको लगे कि बिना बोले काम नहीं चलेगा तो आप सावधानी से अपनी बात को व्यक्त करें। सामने वाला भले ही समझे कि आप गुस्सा कर रहे हैं पर आप भीतर से सचेत रहें। आपका गुस्सा किसी भी तरह से कोई नुकसान न कर बैठे। हम कई बार ट्रकों के पीछे लिखी हुई बड़ी अच्छी बातों को पढ़ा करते हैं। एक बात मैंने कई ट्रकों के पीछे पढ़ी है - 'देखो मगर प्यार से।' गुस्से के साथ भी उसी को जोड़ लो। गुस्सा भी करो तो प्यार से करो। जैसे ही अन्तर्मन में प्यार उभरेगा तो गुस्सा अपने आप गायब हो जाएगा।

### क्रोध को जीतें क्षमा से

किसी के क्रोध का सामना सहनशीलता से करना और मौका पड़ जाए तो शालीनतापूर्वक क्रोध करना हमारे व्यक्तित्व की महानता है। क्षमा तो एक ऐसा मंत्र है जिसे हजारों वर्षों से अपनाया गया है। बड़े-बड़े महापुरुषों ने इसी शस्त्र से आत्मविजय के

संग्राम में सफलता प्राप्त की है। बड़ी से बड़ी विपरीत स्थिति या घटना हो जाने के बावजूद जब व्यक्ति क्षमा भाव से भरा होता है तो विपरीत वातावरण उस पर प्रभाव नहीं डाल सकता। अंग्रेजी का एक बड़ा प्यारा-सा शब्द है सॉरी-क्षमा कीजिए। मनुष्य जो दिन में पच्चास बार इस शब्द का प्रयोग करता है भला विपरीत वातावरण में इसका उपयोग क्यों नहीं करता है। क्षमा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं होता और शान्ति से बढ़कर कोई शक्ति नहीं होती। हम अपने जीवन में इन दोनों का विकास करें। अगर आप क्रोधी स्वभाव के हैं तो सप्ताह में क्रोध का एक व्रत अवश्य करें। जैसे हम कई देवी-देवताओं की आराधना के लिए, व्रत करने के लिए अलग-अलग वार का चयन करते हैं, ऐसे ही सप्ताह में एक दिन अपने मन की शान्ति के लिए एक व्रत करने का चयन करें और व्रत करें क्रोध-मुक्ति का। सुबह उठते ही नियम ले लें कि अब चौबीस घण्टों के दौरान कैसा भी विपरीत वातावरण क्यों न बन जाए पर मैं किसी भी स्थिति में गुस्सा नहीं करूँगा। आप अनुभव करेंगे कि इससे आपके अन्तर्मन में एक विशेष प्रकार की शान्ति अनुभव हो रही है।

## जीवन को ही स्वर्ग बनाएँ

क्रोध करने का अर्थ है, दूसरों की गलतियों का प्रतिशोध स्वयं से लेना। गलती किसी और ने की और गुस्सा आपने किया। सम्भव है सामने वाला तो तुम्हारे गुस्से को झेल कर बाहर चला गया पर तुम अपने ही गुस्से में झुलसते रह गए। क्रोध एक अग्नि है। जो इसे वश में कर लेता है वो इसे बुझाने में समर्थ हो जाता है, और जो इसे वश में नहीं कर पाता वह इसमें जलने के लिए मजबूर हो जाता है। हम अपने क्रोध को वश में करें। अन्यथा एक दिन हम इसके वश में हो जाएँगे। जो महावत अपने हाथी पर अंकुश नहीं रख पाता वो सावधान रहे, वह हाथियों से कभी भी दबोचा जा सकता है। हर समय औरों को डांट-डपट की आदत छोड़ें। औरों की गलतियों को देखने की आदत बन्द करें और अपने ही गिरेबाँ में झाँक कर देखने की कोशिश करें कि हम स्वयं कहाँ खड़े हैं। औरों की और एक अँगुली उठाने वाला व्यक्ति क्या अपनी ओर मुड़ रही तीन अँगुलियों पर नजर डालेगा? कोई तीली थोड़े से संघर्ष से इसलिए जल जाती है क्योंकि उसके ऊपर सिर तो होता है पर दिमाग नहीं, पर मनुष्य जिसके पास सिर भी है और दिमाग भी, वह भला थोड़े से संघर्ष से दियासलाई की तरह क्यों जल उठता है।

प्रेम, शान्ति, दया, क्षमा, करुणा ये जीवन के स्वर्ग हैं। क्रोध, कषाय, चिंता, तनाव, घुटन, अवसाद, अहंकार ये जीवन के नरक हैं। क्या हम बुद्धिमानी का उपयोग करेंगे और अपने दो कदम स्वर्ग की ओर बढ़ाने की कोशिश करेंगे। उस स्वर्ग की ओर जिसे हम मरने के बाद पाना चाहते हैं, पर उसे जीते-जी पाया जा सकता है अगर हम ऐसा करते हैं तो स्वर्गीय होने से पहले ही अपने जीवन में स्वर्ग ईजाद कर सकते हैं।

लेखक- सन्त श्री ललितप्रभ जी
साभार- खुद को बनाएँ जीवन का इंजीनियर


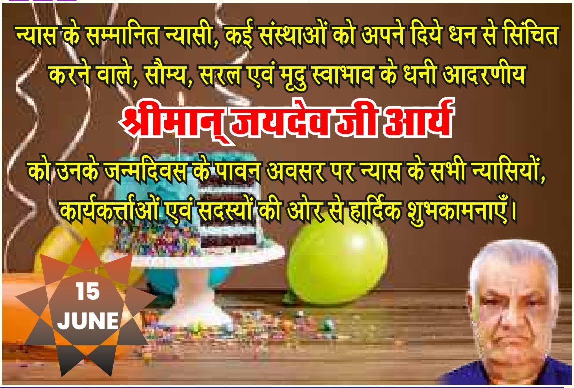

# अलसी (गुण धर्म एवं आत्ययिक प्रयोग)

अलसी को संस्कृत में अतसी, नीलपुष्पी, पार्वती व हिन्दी में अलसी एवं तीसी कहते हैं, इसका अंग्रेजी नाम लिनसीड और लेटिन नाम लीनी सेमीना है।

**गुण धर्म-** अलसी मधुर, तिक्त, स्निग्ध, पिच्छिल, पाक में कटु गुरु व उष्ण है यह वात-पित्त व कफ को नष्ट करती है। यह शक्तिदायक, कामोद्दीपक, शोध नाशक और कुछ मूत्रल होती है। अलसी के बीज बलवर्धक, वेदनानाशक, मूत्र को साफ लाने वाले व खांसी को शान्त करने वाले होते हैं।

अलसी का तेल मधुर, अम्ल, कटु विपाक, स्निग्ध, गुरु, उष्ण, वात विकार एवं वीर्य विकार में हितकर तथा पित्त व रक्त प्रकोपक है। इसका तेल विरेचक व व्रण रोपक है। इसको ५-६ ग्राम की मात्रा में पिलाने से आंतो में जमी मल की गांठे निकल कर दस्त साफ हो जाता है। आंतो की कमजोरी से होने वाली कब्ज एवं बवासीर में लाभ हो जाता है। अलसी के फूल हृदय के लिए हितकारी एवं रक्त पित्त में लाभकारी होते हैं। विभिन्न रोगों में अलसी का प्रयोगः निम्न लिखितानुसार कर सकते हैं।

## दुर्बलता में

१. हल्की भुनी हुई अलसी १०० ग्राम, अश्वगंधा, सफेद मूसली और सौंठ प्रत्येक ५०-५० ग्राम, तालमखाना और तज २५-२५ ग्राम लेकर इन सबको बारीक पीसकर चूर्ण बना कर रख लेवें। इस चूर्ण को १०-१० ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम दूध के साथ सेवन करें।

यह चूर्ण दुर्बलता नाशक, पौष्टिक व शुक्रवर्धक है। इससे शारीरिक दुर्बलता, सेक्स सम्बन्धी कमजोरी, धातु व वीर्य सम्बन्धी विकार दूर होकर शरीर हृष्ट पुष्ट बनता है और यौन-शक्ति बढ़ती है। इसका नियमित सेवन करने से सभी प्रकार के प्रमेह रोग दूर हो जाते हैं तथा पुरुषत्व प्राप्त होता है।

२. अलसी १०० ग्राम व अश्वगंधा ५० ग्राम लेकर बारीक चूर्ण बना लेवें। इसके बाद १०० ग्राम मिश्री या देशी खांड लेकर इसमें मिलाकर किसी ढक्कन वाले बर्तन में रख लें। इसे १० से १५ ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम दूध या जल से सेवन करें। यह पौष्टिक व दुर्बलता नाशक योग है।

३. अलसी और मिश्री बराबर मात्रा में लेकर दोनों को अलग-अलग पीसकर मिलाकर रख लेवें। इस चूर्ण को ५ ग्राम की मात्रा में बराबर देशी घी में मिलाकर खाने से वीर्य का पतलापन दूर होकर बल

वीर्य की वृद्धि होती है।

### कमर व जोड़ों के दर्द में

२५० ग्राम अलसी के तेल में १५ ग्राम सौंठ का चूर्ण और १५ ग्राम नमक डालकर धीमी अग्नि पर पकायें जब चूँता उठने लगे तो नीचे उतार कर ठण्डा होने पर शीशी में भर कर रख लेवें। इस तेल की मालिश करने से जोड़ों का दर्द मांसपेशी का दर्द व कमर दर्द आदि दूर होते हैं।

### कान का दर्द

अलसी को प्याज के रस में पकाकर छान लें। इस रस को कान में डालने से कान का दर्द व सूजन दूर होता है।

### सर्दी जुकाम

अलसी को भूनकर चूर्ण बना लें। फिर इस में देशी खांड या मिश्री को पीसकर मिला लें। इसको ५ से १० ग्राम की मात्रा में चाय या गर्म पानी के साथ सेवन करने से दो दिन में ही जुकाम ठीक हो जाता है।

### कब्ज व एसिडिटी

अलसी का तेल ६ ग्राम की मात्रा में रात को दूध के साथ सेवन करने से सुबह पेट साफ होकर एसिडिटी कम हो जाती है।

### क्षय रोग में

अलसी के बीजों को ५ ग्राम की मात्रा में पीसकर रातभर ठण्डे पानी में भिगोकर रखें। प्रातः इसको मसलकर छान लें, इसमें नींबू का रस मिलाकर गर्म कर के साथ क्षय रोगी को पिलाने से अच्छा लाभ होता है।

डॉ.वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेद चिकित्साधिकारी
१३, श्री रामनगर, सेक्टर-६, उदयपुर


# सत्यार्थ मित्र बनें

**न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।**

**आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।**

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक– अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

# कहानी दयानन्द की

## कथा सरित

**स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र का अवगाहन करते हुए यह जानना भी पाठकों को रुचिकर होगा कि उनके समय में जो निष्पक्ष पत्रकार थे, वे स्वामी जी के बारे में क्या विचार रखते थे? इसलिए हम ब्राह्म पत्रिका से उनके कोलकाता प्रवास के समय में जो विवरण प्रकाशित हुआ था उसे आपके समक्ष रखना उचित समझते हैं। ब्राह्म पत्रिका में 'धर्मतत्त्व' ने १ चैत्र १७६४ शक के अंक में 'दयानन्द सरस्वती' शीर्षक देकर इस प्रकार लिखा था–**

'प्रसिद्ध दयानन्द सरस्वती कलकत्ता आये हैं। हिन्दूशास्त्र में उनका निश्चल अधिकार है। वे मूर्तिपूजक नहीं हैं और अद्वैतवादी भी नहीं हैं। वे जीवात्मा और परमात्मा का भेद स्वीकार करते हैं और एक निराकार ईश्वर की उपासना करते हैं। उनके मत में वेद का मन्त्रभाग निर्भ्रांत है। अन्तःस्थ ऐश्वरिक ज्ञान को ही वे वेद का नाम देते हैं। मन्त्रभाग उस ज्ञान का प्रकाशक है। विधवा-विवाह के सम्बन्ध में उनकी सम्मति युक्तिसंगत है। बाल्य-विवाह के वे नितान्त विरोधी हैं। वे यह सिद्ध करते हैं कि कन्या के लिए १८ और पुरुष के लिए ३० वर्ष की आयु विवाह के लिए प्रकृत समय और शास्त्रोक्त है। वे जातिभेद स्वीकार नहीं करते; ज्ञान, धर्म के तारतम्य के अनुसार : वर्ण-भेद वा अवस्था-भेद स्वीकार करते हैं। वे पुनर्जन्म वा योनि-भ्रमण में विश्वास करते हैं। जिस विषय को वे नहीं जानते उसे सरलभाव से कह देते हैं। वे बड़े विद्वान्, शिष्टाचारी, सदाचारी और सरल हैं, किन्तु मूर्तिपूजा के बड़े विद्वेषी हैं। संस्कृत भाषा उनकी मातृभाषा हो गई है। वे अनायास ही श्रुति-मधुर संस्कृत भाषा में वार्त्तालापादि करते हैं, उनके साथ बातचीत करने से सभी प्रसन्न होकर आते हैं।

'यह एक दिग्गज पण्डित हैं, यह हिन्दू शास्त्र-विशारद् हैं, संस्कृत भाषा इनके आयत्ताधीन है। विशेषकर इनकी संस्कृत भाषा इतनी प्रांजल, श्रुति-मधुर और सरल है कि संस्कृत से अनिभिज्ञ पुरुष भी उसे अनायास बहुत-कुछ समझ सकते हैं, सरस्वती की बुद्धि बहुत परिष्कृत और तीक्ष्ण है। उनकी क्षमता असाधारण है, उनमें लोगों को आकर्षित करने की विलक्षण शक्ति है। वे बड़े मिष्टभाषी हैं। एक ईश्वर की उपासना का प्रचार और मूर्त्तिपूजा का विनाश उनके जीवन का प्रधान लक्ष्य है। पाश्चात्य विज्ञान के आलोक से आलोकित न होने पर भी वे जिस विशद् रूप से, उदारता के साथ सारे विषयों को प्रकट करते हैं, उसे देखकर अवाक् होना पड़ता है। अब तक उन्होंने कलकत्ता में तीन दिन व्याख्यान दिये हैं। पहले दिन ईश्वर के स्वरूप और धर्म पर, दूसरे दिन एक ईश्वर की उपासना पर तीसरे दिन मनुष्य के कर्त्तव्य पर। ईश्वर के स्वरूप के सम्बन्ध में जो बातें उन्होंने कहीं, उनमें कई बहुत सूक्ष्म और गूढ़ थीं।

आश्चर्य का विषय यह है कि वे सब विषयों को ऐसे परिष्कृत भाव से खोलकर कहते हैं कि वह सबकी समझ में अनायास ही आ जाते हैं। वह कहते हैं कि एक तो अज्ञान-निबन्धन से भारतवर्ष के लोगों की बुद्धि जड़ हो गई है, और जड़ की उपासना करने से वह और भी जड़ हो गई है। एक चैतन्य, निराकार ईश्वर की उपासना के बिना मनुष्य की मुक्ति नहीं हो सकती। यह उनका दृढ़ विश्वास है। उपासना के कई लक्षण हैं- चित्त-शुद्धि, इन्द्रिय-निग्रह, मनःसंयोग, प्रीति, ईश्वर-गुण-कीर्तन और प्रार्थना। उनकी सम्मति में भारतवासियों में से किसी को हिन्दू कहना उचित नहीं है, क्योंकि यवनों ने अपमान करने के अभिप्राय से ही हमें यह नाम दिया था। **क्रमशः**

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

# समाचार

### माँ शारदा आर्य समिति उदयपुर द्वारा 'बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु आत्मरक्षा एवं चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर का आयोजन'

उदयपुर के समस्त आर्य समाजों के संयुक्त तत्वावधान में एवं उदयपुर विश्वकर्मा जाँगिड़ विकास संस्था के विशेष सहयोग से 'सात दिवसीय पूर्ण आवासीय बालिका आत्मरक्षा एवं चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन दिनांक १६ जून से २२ जून २०२५ तक किया जा रहा है। यह शिविर 'उदयपुर विश्वकर्मा जाँगिड़ विकास संस्था, भुवाणा विस्तार योजना, फेज/२ चित्रकूट नगर, उदयपुर (राजस्थान)' में आयोजित होगा।

इस शिविर का उद्देश्य बालिकाओं को आत्मरक्षा, योगाभ्यास, मानसिक और शारीरिक सशक्तिकरण, वैदिक संस्कृति के मूल्यों, वेद मंत्र, देशभक्ति गीत, भजन, सूझबूझ व आत्मविश्वास जैसे विषयों में प्रशिक्षित करना है। शिविर के दौरान लड़कियों को व्यायाम, योगासन, आत्मरक्षा की विभिन्न तकनीकों तथा नैतिक मूल्यों से जोड़ने वाली गतिविधियाँ करवाई जाएँगी।

इस आयोजन को सफल बनाने में आर्य समाज के वरिष्ठजन, सहयोगी संस्थाएँ जैसे श्रीमान जितेंद्र भाटिया; सर्वे भवन्तु सुखिनः ट्रस्ट दिल्ली, आर्य समाज; पिछोली, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र युवा मण्डल, आर्य समाज; हिरणमगरी, आर्य समाज; सज्जननगर, मेवाड़ जन-शक्ति दल; उदयपुर, पतंजलि योग समिति; उदयपुर, आओ मन्दिर चलें अभियान (एक भक्ति आन्दोलन; उदयपुर) आर्य समाज; निम्बाहेड़ा, हिन्दू जागरण मंच; उदयपुर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, राष्टीय स्वयंसेवक समिति, वैदिक संस्कृति प्रचार संघ; उदयपुर सहित अनेक संस्थाओं का महत्वपूर्ण सहयोग रहेगा। सम्पर्क सूत्र- ६००१०१०५१७, ७२३९८५२१६३, ७८२२०७८९९४, ६९७७१४०६७३, ८४३२८५५१०४

### न्यास की पूर्व कार्मिक सुश्री करिश्मा शर्मा के दादा जी का निधन

न्यास की पूर्व स्टाफ एवं NMCC YOUTH की सदस्या सुश्री करिश्मा शर्मा के दादा श्री खेमशंकर जी शर्मा का निधन दिनांक ६ मई २०२५ को हो गया। इस दुःख की घड़ी में न्यास, नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र (युवा प्रकोष्ठ) एवं सत्यार्थ सौरभ के सभी अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता अपनी ओर से शर्मा परिवार को शोक संवेदना सम्प्रेषित करते हैं तथा प्रभु से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें तथा परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करें।

- भँवर लाल गर्ग-कार्यालय मंत्री

### वैदिक संस्कारों को समर्पित महिला पुरोहित श्रीमती सरला आर्या

उदयपुर निवासी श्रीमती सरला आर्य समाज हिरण मगरी; उदयपुर में पुरोहित नियुक्त हैं अन्य संस्कारों के साथ वैदिक पद्धति द्वारा अन्तिम संस्कार भी सम्पन्न कराती हैं। कोरोना काल से प्रारम्भ कर अब तक ७०-७५ अन्तिम संस्कार व ५० से ज्यादा विवाह संस्कार करा चुकी हैं। अन्तिम संस्कार तथा उठावना मात्र सेवा के उद्देश्य से कराती हैं। कोई दक्षिणा या राशि नहीं लेती हैं। अन्य संस्कारों से जो दक्षिणा स्वरूप राशि मिलती है उसका सदुपयोग दयानन्द कन्या विद्यालय; उदयपुर, पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल; चितौड़गढ़ तथा रानी गाइदिल्यु नागालैण्ड व न्योतारा उ.प्र. के लिए करती हैं। ब्यावर (राज.) में श्री जमनालाल श्रीमती दुर्गा देवी आर्य स्वतन्त्रता सेनानी के घर में जन्मी सरला गुप्ता (पितृकुल के संस्कारों के कारण) ने पति श्री राजकुमार गुप्ता की सेवानिवृत्ति के पश्चात् यह कार्य प्रारम्भ किया, वैवाहिक जीवन बहुत संघर्षपूर्ण व्यतीत हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद प्रथम गौरक्षा आन्दोलन (सन् १९६६-६७ में) में पूरे भारत से प्रथम जत्था ब्यावर आर्य समाज के द्वारा सरला जी की माँ दुर्गादेवी के नेतृत्व में गया, जिस में ३ माह तिहाड़ जेल में (मात्र ७ वर्ष की आयु) परिवार के साथ रही, जिसके कारण सरला जी के पिताजी का मकान तक बिक गया। ६ दिसम्बर १९९२ को बाबरी ढांचा तोड़ने के लिए अपने पूरे परिवार के साथ अयोध्या गईं। सभी संस्कारों को सम्पन्न कराने हेतु उदयपुर के अलावा सम्पूर्ण राजस्थान व अन्य राज्यों में भी जाती हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि वैदिक सद्धर्म के प्रचार-प्रसार में इनकी ऐसी ही निष्ठा बनी रहे।

- नवनीत आर्य; पुरोहित-न्यास

### न्यास की कार्मिक श्रीमती दुर्गा के दादा जी का निधन

न्यास की स्टाफ एवं NMCC YOUTH की सदस्या श्रीमती दुर्गा गोरमात के दादा श्री कचरु लाल जी भटड़ियावत का निधन दिनांक १६ अप्रैल २०२५ को हो गया। इस दुःख की घड़ी में न्यास, नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र (युवा प्रकोष्ठ) एवं सत्यार्थ सौरभ के सभी अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं की ओर से भटड़ियावत परिवार को शोक संवेदना। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें तथा परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करें।

### प्रसिद्ध खगोलशास्त्री डॉ. जयन्त नारळीकर का दुःखद निधन

प्रसिद्ध खगोलशास्त्री डॉ. जयन्त नारळीकर के दुःखद निधन से भारत ने एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक व विज्ञान प्रसारक को खोया है। पद्म विभूषण डॉ. नारळीकर को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से यही प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे। उन्होंने उच्चतम अध्ययन के पश्चात् भारत में वापस आकर अनुसंधान के साथ-साथ विज्ञान के गूढ़ विश्लेषण को रोचक रूप से प्रस्तुत किया तथा उसे मराठी भाषा में प्रकाशित कर लोकप्रिय बनाया। उनका यह योगदान सतत् स्मरणीय एवं प्रेरक रहेगा।

स्वामी आत्मानन्द वैदिक गुरुकुल; मलारना चौड़ सवाई माधोपुर में एक बार फिर प्रवेश परीक्षा दिनांक 22 जून को होगी। जो अपने बच्चों को चौथी से नौवीं कक्षा तक प्रवेश दिलाना चाहते हैं वे दिनांक 22 रविवार को परीक्षा दिला सकते हैं।

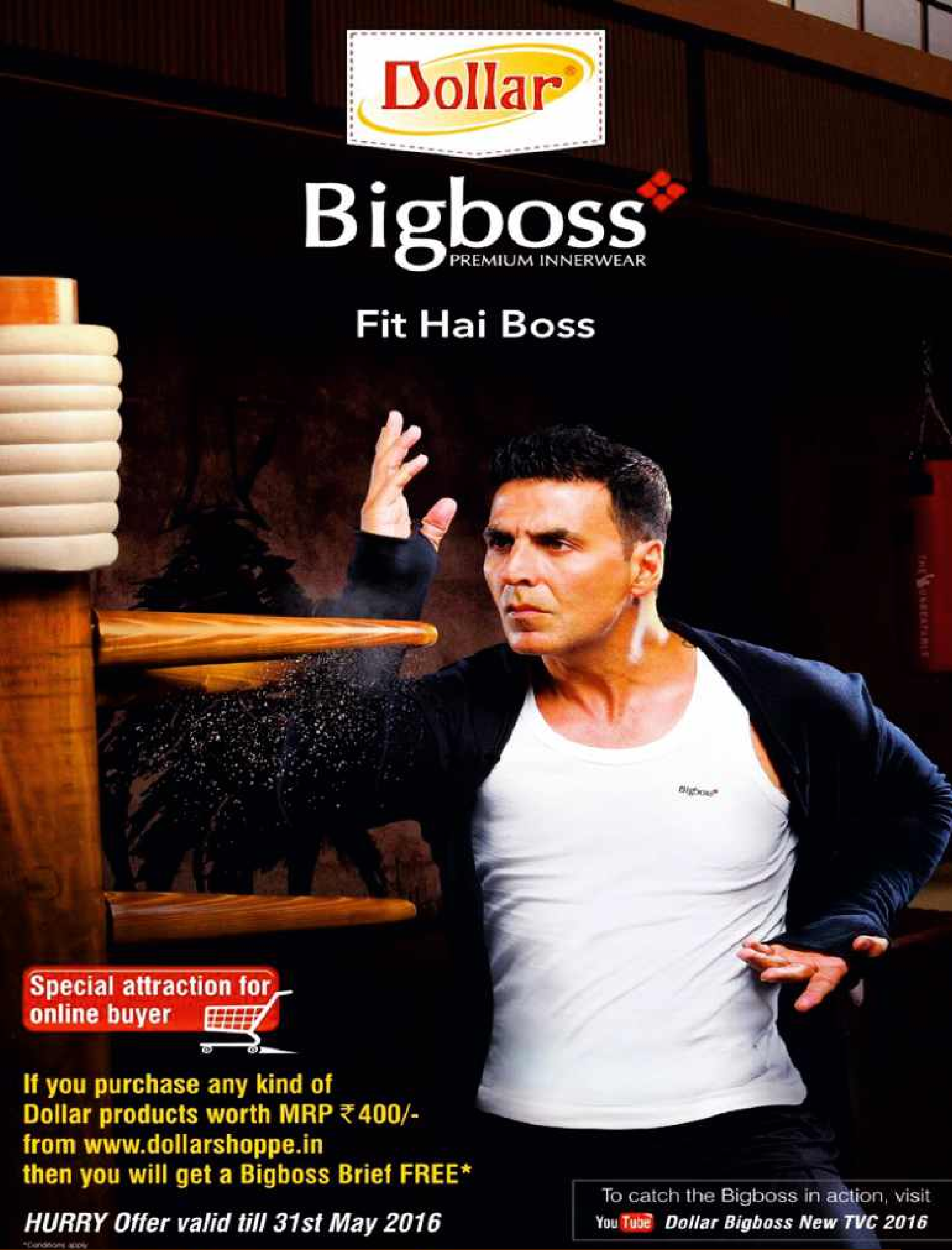
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Special attraction for online buyer
If you purchase any kind of
Dollar products worth MRP ₹400/-
from www.dollarshoppe.in
then you will get a Bigboss Brief FREE*
HURRY Offer valid till 31st May 2016
To catch the Bigboss in action, visit
YouTube Dollar Bigboss New TVC 2016

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 | June-2024 | Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2025-2027

**यह सब जगत् सृष्टि के पहिले प्रलय में अन्धकार से आवृत्त आच्छादित था और प्रलयारम्भ के पश्चात् भी वैसा ही होता है। उस समय न किसी के जानने, न तर्क में लाने और न प्रसिद्ध चिह्नों से युक्त इन्द्रियों से जानने योग्य था, और न होगा, किन्तु वर्त्तमान में जाना जाता है और प्रसिद्ध चिह्नों से युक्त जानने के योग्य होता और यथावत् उपलब्ध है।**

- सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास पृष्ठ २१३

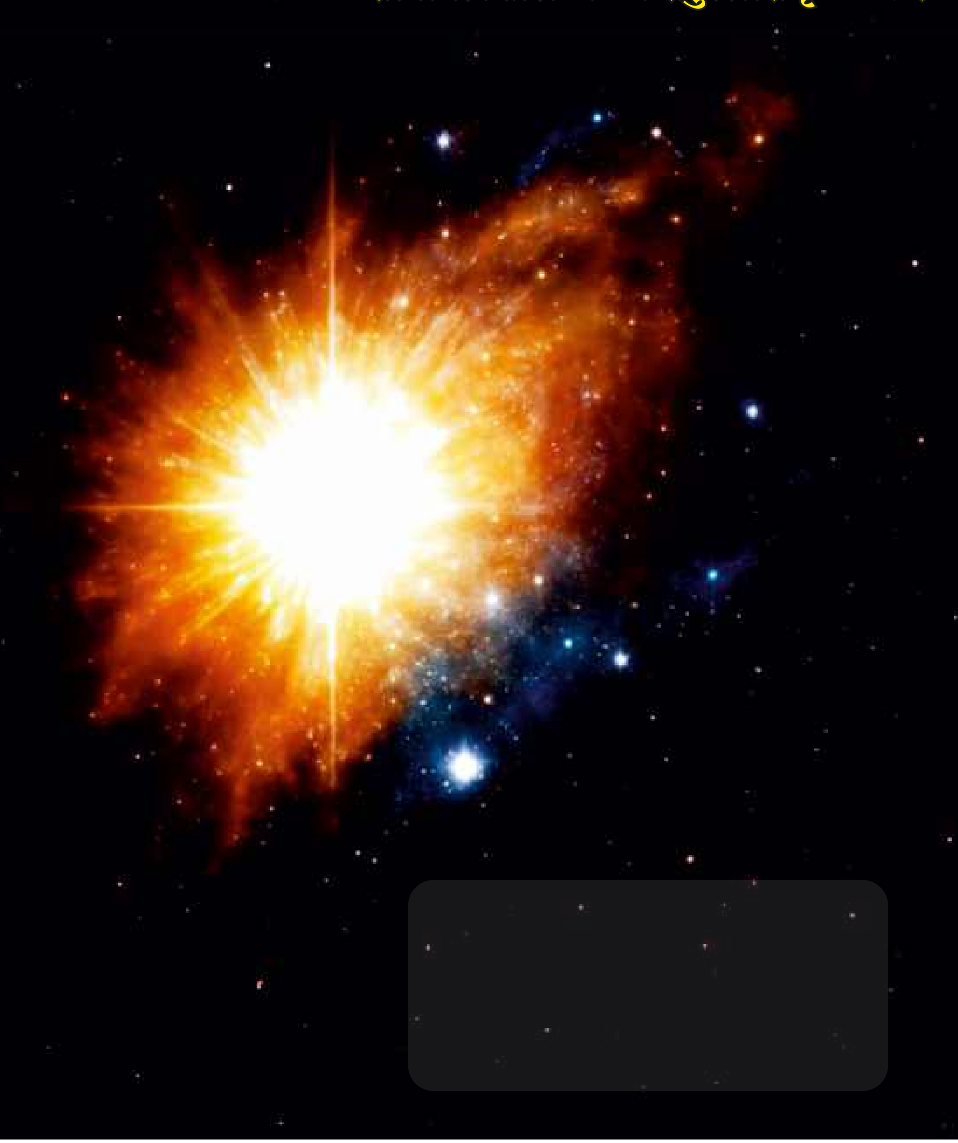

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर